1 ध्वनि कविता

कवि- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

कवि का मानना है कि उसके जीवन रूपी उपवन में अभी- अभी वसंत का आगमन हुआ है । अभी उसके जीवन का अंत नहीं हो सकता । उसके जीवन में आने वाला वसंत सुकुमार है। जिस प्रकार वसंत के आगमन से प्रकृति हरी-भरी हो उठती, कलियाँ खिलकर पुष्प बन जाती हैं, प्रकृति में मृदुलता एवं कोमलता छा जाती है , उसी तरह उसके जीवन में भी खुशियाँ भर गई हैं। कवि प्रभात काल में अलसाई कलियों पर अपना कोमल कर फेरकर उन्हें प्रात :काल का संदेश देना चाहता है। स्वयं कवि अच्छे काम करते हुए देश के युवाओं को रचनात्मक कार्यों की ओर उन्मुख करना चाहता है।

काव्य पंक्तियों को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

अभी न होगा मेरा अंत
अभी. अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसंत.
अभी न होगा मेरा अंत ।
हरे- हरे ये पात
डालियाँ कलियाँ कोमल गात ।
मैं ही अपना स्वप्न मृदल-कर
फेरुँगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्युष मनोहर ।

1 कवि और कविता का नाम लिखिए।

उत्तर- कवि का नाम सूर्यकांत त्रिपाठी निराला , कविता का नाम 'ध्वनि'

2 'अभी न होगा मेरा अंत' कवि ने ऐसा क्यों कहा है ?

उत्तर- कवि ने ऐसा इसलिए कहा होगा, क्योंकि उसके जीवन में अभी-अभी वसंत का आगमन हुआ है जिससे उसका जीवन खुशियों से भर गया है। वह उत्साह से भरा हुआ है।

3 वसंत के आने पर पेड़ों में क्या परिवर्तन हो जाता है ?

उत्तर- वसंत के आने पर पेड़ों पर हरे-हरे पत्ते आ जाते हैं। नई-नई डालियाँ निकल आती हैं जिन पर कोमल कलियाँ आ जाती हैं। नये पत्ते और कलियों से पेड़ में कोमलता आ जाती है ।

4 कवि कलियों को किसका संदेश देना चाहता है ?

उत्तर- कवि कलियों को मनोहर प्रभात का संदेश देना चाहता है ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

1 कवि को ऐसा विश्वास क्यों है कि उसका अंत अभी नहीं होगा ?

उत्तर- क्योंकि कवि जीवन के प्रति निराश नहीं है । कवि उत्साह और ऊर्जा से भरा हुआ है । उसके उपवन में अभी. अभी संत का आगमन हुआ है । उसे युवकों को उत्साहित करने जैसे अनेक कार्य करने है और स्वयं की रचनाओं व कार्यों की खुशबू चारों ओर फैलानी है ।

2 फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि क्या प्रयास करता है ?

उत्तर- फूलों का आलस्य छीन लेना चहाता है । उन को अनंत समय तक खिले रहने के लिए प्रेरित करता है तथा उनकी आँखों की बोझीलता दूर करना चाहता है ।

3 वसंत को ऋतुराज क्यों कहा जाता है ?

उत्तर- वसंत ऋतु में न तो ज्यादा गर्मी होती है और न ही ज्यादा सर्दी । वसंत ऋतु में सर्दी और गर्मी समान होने पर भी मौसम बहुत सुहावना होता है। चारों तरफ हरियाली होने से मदमाती कोयल का गानएतन मन को महकती हवा तथा पूरे योवन का जोश प्रकृति की महका देता है। यह ऋतु मनुष्य , पशु व जीवों के लिए वरदान होती है और सबको प्रसन्न करती है इसलिए इसे ऋतुराज कहा जाता है।

अतिरिक्त प्रश्न

1.पुनरुक्त शब्द छाँटकर लिखिए

उत्तर- अभी-अभी, हरे-हरे, पुष्प-पुष्प आदि ।

2.वन किसका प्रतीक है ?

उत्तर- कवि के जीवन, उपवन का ।

3.निद्रित कलियाँ किसका प्रतीक हैं ?

उत्तर- आलस में डूबे हुए नवयुवकों का ।

4.इस कविता का क्या संदेश है ?

उत्तर- वसंत ऋतु की भांति रचनात्मक कार्यों को करने का ।

5. ध्वनि का क्या अर्थ है ?

उत्तर- आवाज़ , यहाँ कवि के अन्तर्मन की आवाज़ ।

2. फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि कौन-कौन-सा प्रयास करता है?

उत्तर:- फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि उन्हें कलियों की स्थिति से निकालकर खिले फूल बनाना चाहता है। कवि का मानना है कि उसके जीवन में वसंत आया हुआ है। इसलिए वह कलियों को हाथों के वासंती स्पर्श से खिला देगा। वह फूलों की आँखों से आलस्य हटाकर उन्हें चुस्त व जागरूक करना चाहता है।

3. कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए क्या करना चाहता है?

उत्तर:- कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए उन पर अपना हाथ फेरकर उन्हें जगाना चाहता है। वह उनको चुस्त, प्राणवान, आभावान व पुष्पित करना चाहता है।

अतः कवि नींद में पड़े युवकों को प्रेरित करके उनमें नए उत्कर्ष के स्वप्न जगह देगा , उनका आलस्य दूर भगा देगा तथा उनमें नये उत्साह का संचार करना चाहता है।

4. वसंत को ऋतुराज क्यों कहा जाता है? आपस में चर्चा कीजिए।

उत्तर:- वसंत को ऋतुराज कहा जाता है क्योंकि यह सभी ऋतुओं का राजा है। इस ऋतु में प्रकृति पूरे यौवन होती है। इस ऋतु के आने पर सर्दी कम हो जाती है। मौसम सुहावना हो जाता है। इस समय पंचतत्व अपना प्रकोप छोड़कर सुहावने रूप में प्रकट होते हैं। पंचतत्व जल , वायु, धरती, आकाश और अग्नि सभी अपना मोहक रूप दिखाते हैं। पेड़ों में नए पत्ते आने लगते हैं। आम बौरों से लद जाते हैं और खेत सरसों के फूलों से भरे पीले दिखाई देते हैं। सरसों के पीले फूल ऋतुराज के आगमन की घोषणा करते हैं। खेतों में फूली हुई सरसों ,पवन के झोंकों से हिलती, ऐसी दिखाई देती है, मानो, सामने सोने का सागर लहरा रहा हो। कोयल पंचम स्वर में गाती है और सभी को कुहू- कुहू की आवाज़ से मंत्रमुग्ध करती है। इस ऋतु में उसकी छठा देखते ही बनती है। इस ऋतु में कई प्रमुख त्यौहार मनाए जाते हैं, जैसे - वसंत पंचमी, महा शिवरात्रि, होली आदि।

5. वसंत ऋतु में आ नेवाले त्योहारों के विषय में जानकारी एकत्र कीजिए और किसी एक त्योहार पर निबंध लिखिए।

उत्तर:- वसंत ऋतु में कई त्यौहार मनाए जाते है, जैसे - वसंत-पंचमी, महा शिवरात्रि, होली आदि।

होली

हमारा देश भारत विश्व का अकेला एवं ऐसा अनूठा देश है , जहँ पूरे साल कोई न कोई त्योहार मनाया जाता है। रंगों का त्योहार होली हिंदुओं का प्रसिद्ध त्योहार है , जो फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

यह त्योहार रंग एवं उमंग का अनुपम त्योहार है जब वसंत अपने पूरे यौवन पर होता है। सर्दी को विदा देने और ग्रीष्म का स्वागत करने के लिए इसे मनाया जाता है। संस्कृत साहित्य में इस त्योहार को 'मदनोत्सव' के नाम से भी पुकारा जाता है।

होली के संबंध में एक पौराणिक कथा प्रचलित है कि भगवान विष्णु के परम भक्त प्रहलाद को अग्नि में जलाने के प्रयास में उसकी बुआ 'होलिका' अग्नि में जलकर स्वाहा हो गई थी। इसी घटना को याद कर प्रतिवर्ष होलिका दहन किया जाता है। दूसरे दिन फाग खेला जाता है। इस दिन छोटे- बड़े, अमीर-गरीब आदि का भेदभाव मिट जाता है। सब एक दूसरे पर रंग फेंकते हैं , गुलाल लगाते हैं और गले मिलते हैं। चारों ओर आनंद , मस्ती और उल्लास का समाँ बँध जाता है। ढोल पर थिरकते , मजीरों की ताल पर झूमते , नाचते-गाते लोग आपसी भेदभाव भुलाकर अपने शत्रु को भी गले लगा लेते हैं। परन्तु कुछ लोग अशोभनीय व्यवहार कर इस त्योहार की पवित्रता को नष्ट कर देते हैं।

हमारा कर्तव्य है कि हम होली का त्योहार उसके आदर्शों के अनुरू प मनाएँ तथा आपसी वैमनस्य , वैर-भाव, घृणा आदि को जलाकर एक-दूसरे पर गुलाल लगाकर आपस में प्रेम,एकता और सद्भाव बढ़ाने का प्रयास करें।

"होली के अवसर पर आओ एक दूजे पर गुलाल लगाएँ
अपने सब भेदभाव भुलाकर, प्रेम और सद्भाव बढाएँ"

• भाषा की बात

6. 'हरे-हरे', 'पुष्प-पुष्प' में एक शब्द की एक ही अर्थ में पुनरावृत्ति हुई है।

- कविता के 'हरे-हरे ये पात ' वाक्यांश में 'हरे-हरे' शब्द युग्म पत्तों के लिए विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। यहाँ 'पात' शब्द बहुवचन में प्रयुक्त है।
- ऐसा प्रयोग भी होता है जब कर्ता या विशेष्य एक वचन में हो और कर्म, या क्रिया या विशेषण बहुवचन में; जैसे - वह लंबी-चौड़ी बातें करने लगा।
- कविता में एक ही शब्द का एक से अधिक अर्थों में भी प्रयोग होता है - "तीन बेर खाती ते वे तीन बेर खाती है।" जो तीन बार खाती थी वह तीन बेर खाने लगी है।
- एक शब्द 'बेर' का दो अर्थों में प्रयोग करने से वाक्य में चमत्कार आ गया। इसे यमक अलंकार कहा जाता है।
- कभी-कभी उच्चारण की समानता से शब्दों की पुनरावृत्ति का आभास होता है जबकि दोनों दो प्रकार के शब्द होते हैं; जैसे - मन का/मनका।
- ऐसे वाक्यों को एकत्र कीजिए जिनमें एक ही शब्द की पुनरावृत्ति हो।
- ऐसे प्रयोगों को ध्यान से देखिए और निम्नलिखित पुनरावृत शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए -
- बातों-बातों में, रह-रहकर, लाल-लाल, सुबह-सुबह, रातों-
- रात, घड़ी-घड़ी।
- उत्तर:- बातों-बातों - बातों-बातों में कब घर आ गया पता ही नहीं चला।
- रह-रहकर - कल रात से रह-रहकर बारिश हो रही है।
- लाल-लाल - लाल-लाल आँखों से पिताजी अमर को घूर रहें थे।

- सुबह-सुबह - दादीजी सुबह-सुबह ही पूजा करने मंदिर निकल जाती हैं।
- रातों-रात - ईश्वर की कृपा से रामन रातों-रात अमीर हो गया।
- घड़ी-घड़ी - घड़ी-घड़ी शिक्षक उसे पढ़ाई में ध्यान लगाने के लिए टोकते रहते थे।

पाठ 2

लाख की चूड़ियाँ

- कामतानाथ

मशीनों के प्रयोग से हमें लाभ है , किन्तु अप्रत्यक्ष रूप में इससे हानि भी होती है। मशीनों का प्रयोग विकास का सूचक समझा जाता है किन्तु हस्तकला एवं कुटीर उद्योगों पर इसका कितना बुरा एवं दूरगामी असर होता है , इसका वर्णन किया गया है। मशीनों के प्रयोग से बदलू जैसे कारीगरों के हाथ कट गए, उनका काम छिन गया। वे या तो बेरोजगार हो चुके हैं या फिर कोई और व्यवसाय अपनाने को विवश हैं।

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

गद्यांश 1

बदलू मनिहार था। चूड़ियाँ बनाना उसका पैतृक पेशा था और वास्तव में वह बहुत ही सुंदर चूड़ियाँ बनाता था । उसकी बनाई हुई चूड़ियों की खपत भी बहुत थी। उस गाँव में तो सभी स्त्रियाँ उसकी बनाई हुई चूड़ियाँ पहनती ही थीं आस .पास के गाँव के लोग उससे चूड़ियाँ ले जाते थे परन्तु वह कभी भी चूड़ियों को पैसों से बेचता न था उसका अभी तक वस्तु विनिमय का तरीका था और लोग अनाज के बदले उससे चूड़ियाँ ले जाते थे बदलू स्वभाव से सीधा था । मैंने कभी भी उसे किसी से झगड़ते नहीं देखा।

1. बदलू कौन था?

उत्तर- बदलू एक मनिहार था।

2. उसका पैतृक पेशा क्या था ?

उत्तर- चूड़ियाँ बनाना उसका पैतृक पेशा था।

3. बदलू की बनाई चूड़ियों की खपत अधिक क्यों थी?

उत्तर- क्योंकि उसके हाथों से बनी चूड़ियाँ सुन्दर व सजीली होती थी तथा वे चूड़ियाँ आस पास के गावों में भी मशहूर थी।

3. वस्तु विनिमय से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- वस्तु विनिमय का अर्थ है वस्तु के बदले वस्तु का लेन देन करना न कि अपनी किसी वस्तु को पैसों में बेचना

4. उसकी बनाई चूड़ियों की दो विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर- -

1 उसकी चूडियाँ बहुत सुन्दर थी।

2 चूड़ियाँ रंग बिरंगे लाख से बनाई जाती थी ।

गद्यांश 2

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

रज्जो ने चार पाँच आम अंजुली में लेकर मेरी ओर बढ़ा दिए। आम लेने के लिए मैंने हाथ बढ़ाया तो मेरी निगाह एक क्षण के लिए उसके हाथों पर ठिठक गई। गोरी- गोरी कलाइयों पर लाख की चूड़ियाँ

बहुत ही फब रही थी। बदलू ने मेरी दृष्टि देख ली ओर बोल पड़ा , यही आखिरी जोड़ा बनाया था जमींदार साहब की बेटी के विवाह पर। दस आने मुझको दे रहे थे। मैंने जोड़ा नहीं दिया। कहा शहर से ले आओ ।

1. रज्जो कौन थी ? वह लेखक को क्या देना चाहती थी ?

उत्तर- रज्जो बदलू मनिहार की बेटी थी । वह लेखक को आम देना चाहती थी ।

2. लेखक को क्या देखकर विस्मय हुआ ?

उत्तर- रज्जो की कलाइयों पर सुन्दर लाख की चूड़ियाँ देखकर लेखक को विस्मय हुआ ।

3. बदलू ने जमींदार को चूड़ियों का जोड़ा क्यों न दिया ?

उत्तर- क्योंकि जमींदार चूडियों के पैसे कम दे रहा था ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था और बदलू को बदलू मामा न कह कर बदलू काका क्यों कहता था ?

उत्तर- क्योंकि बदलू मनिहार उसे लाख की रंग बिरंगी गोलियां बना कर देता था ।

वह बदलू को बदलू मामा न कहकर बदलू काका इसलिए कहता था क्योंकि गाँव के सभी बच्चे बदलू को काका कहकर बुलाते थे।

प्रश्न 2 मशीनी युग बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया ?

उत्तर- जिस प्रकार मशीनों का प्रभाव हर किसी के जीवन में दिखाई दे रहा था बदलू भी उससे अछूता नहीं रहा था उसका जीवन पूरी तरह से बदल गया वह मानसिक व शारीरिकरूप से बीमार हो गया।

प्रश्न 3 लाख की चूड़ियाँ किससे व किस प्रकार बनती हैं ?

उत्तर- लाख की चूड़ियाँ लाख नामक पदार्थ से बनती हैं पहले लाख को गरम करके पिघलाया जाता है। फिर लकड़ी की चौखट पर उसे सलाख के सामान पतला करके चूड़ी का आकार दिया जाता है। फिर गोल बेलन जैसे गुटके पर दल कर उन्हें सही आकर देकर रंगा जाता है ।

प्रश्न 4 बदलू को किस बात से चिढ़ थी ?

उत्तर- बदलू को काँच की चूड़ियाँ पहनने से अत्यधिक चिढ़ थी यदि किसी स्त्री को काँच की चूड़ियाँ पहने देख लेता तो अन्दर ही अन्दर जल जाता और कभी कभी दो चार बातें भी सुना देता था ।

अतिरिक्त प्रश्न

1. लाख शब्द का अर्थ बताओ ।

उत्तर- पेड़ की छाल से प्राप्त तरल पदार्थ जो अत्यंत ज्वलनशील होता है ।

2. लेखक बदलू को क्या कहकर पुकारता था ?

उत्तर- बदलू काका ।

3. बदलू का पैतृक पेशा क्या था ?

उत्तर- लाख की चूड़ियाँ बनाना ।

4. उसका चूड़ियाँ बेचने का क्या तरीका था ?

उत्तर- वस्तु विनिमय ।

5.लेखक गर्मियों की छुट्टियों में कहाँ जाता था ?

उत्तर- अपने मामा के घर।

अन्य प्रश्न

1. बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था और बदलू को 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' क्यों कहता था?

उत्तर:- बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से इसलिए जाता था क्योंकि लेखक के मामा के गाँव में लाख की चूड़ियाँ बनाने वाला कारीगर बदलू रहता था। लेखक को बदलू काका से अत्यधिक लगाव था। वह लेखक को ढेर सारी लाख की रंग- बिरंगी गोलियाँ देता था इसलिए लेखक अपने मामा के गाँव चाव से जाता था। गाँव के सभी लोग बदलू को 'बदलू काका' कहकर बुलाते थे इस कारण लेखक भी 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' कहता था।

2. वस्तु-विनिमय क्या है? विनिमय की प्रचलित पद्धति क्या है?

उत्तर:- 'वस्तु विनिमय' में एक वस्तु को दूसरी वस्तु देकर लिया जाता था। वस्तु के लिए पैसे नहीं लिए जाते थे। वस्तु के बदले वस्तु ली-दी जाती थी। किन्तु अब मुद्रा के चलन के कारण वर्तमान परिवेश में वस्तु का लेन-देन मुद्रा के द्वारा होता है। विनिमय की प्रचलित पद्धति पैसा है।

3. 'मशीनी युग' ने कितने हाथ काट दिए हैं। ' - इस पंक्ति में लेखक ने किस व्यथा की ओर संकेत किया है?

उत्तर:- इस पंक्ति में लेखक ने कारीगरों की व्यथा की ओर संकेत किया है कि मशीनों के आगमन के साथ कारीगरों के हाथ से काम- धंधा छिन गया। मानो उनके हाथ ही कट गए हों। उन कारीगरों का रोजगार इन पैतृक काम धन्धों से ही चलता था। उसके अलावा उन्होंने कभी कु छ नहीं सीखा था। वे पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी इस कला को बढ़ाते चले आ रहे हैं और साथ में रोज़ी रोटी भी चला रहें हैं। परन्तु मशीनी युग ने जहाँ उनकी रोज़ी रोटी पर वार किया है। मशीनों ने लोगों को बेरोजगार बना दिया।

4. बदलू के मन में ऐसी कौन-सी व्यथा थी, जो लेखक से छिपी न रह सकी?

उत्तर:- बदलू लाख की चूड़ियाँ बेचा करता था परन्तु जैसे- जैसे काँच की चूडियों का प्रचलन बढ़ता गया उसका व्यवसाय ठप पड़ने लगा। अपने व्यवसाय की यह दुर्दशा बदलू को मन ही मन कचौटती थी। बदलू के मन में इस बात कि व्यथा थी कि मशीनी युग के प्रभावस्वरुप उस जैसे अ नेक कारीगरों को बेरोजगारी और उपेक्षा का शिकार होना पड़ा है। अब लोग कारीगरी की कद्र न करके दिखावटी चमक पर अधिक ध्यान देते हैं। यह व्यथा लेखक से छिपी न रह सकी।

5. मशीनी युग से बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया?

उत्तर:- मशीनी युग से बदलू के जीवन में यह बदलाव आया की बदलू का व्यवसाय बंद हो गया। वह बेरोजगार हो गया। काम न करने से उसका शरीर भी ढल गया , उसके हाथों-माथे पर नसें उभर आईं। अब वह बीमार रहने लगा।

6. लाख की वस्तुओं का निर्माण भारत के किन- किन राज्यों में होता है? लाख से चूड़ियों के अतिरिक्त क्या-क्या चीज़ें बनती है? ज्ञात कीजिए।

उत्तर:- लाख की वस्तुओं का निर्माण सर्वाधिक उत्तरप्रदेश में होता है। लाख से चूड़ियाँ , मूर्तियाँ, गोलियाँ तथा सजावट की वस्तुओं का निर्माण होता है।

• भाषा की बात

7. 'बदलू को किसी बात से चिढ़ थी तो काँच की चूडियों से ' और बदलू स्वयं कहता है - "जो सुंदरता काँच की चूडियों में होती है लाख में कहाँ संभव है?" ये पंक्तियाँ बदलू की दो प्रकार की मनोदशाओं को सामने लाती हैं। दूसरी पंक्ति में उसके मन की पीड़ा है। उसमें व्यंग्य भी है। हारे हुए मन से , या दुखी मन से अथवा व्यंग्य में बोले गए वाक्यों के अर्थ सामान्य नहीं होते। कुछ व्यंग्य वाक्यों को ध्यानपूर्वक समझकर एकत्र कीजिए और उनके भीतरी अर्थ की व्याख्या करके लिखिए।

उत्तर:- व्यंग्य वाक्य - 'अब पहले जैसी औलाद कहाँ?'

व्याख्या - आजकल किसी भी बुजुर्ग के मुख से आमतौर पर यह सुनने मिलता है जिसमें उनके हृदय में छिपा दुःख और व्यंग्य देखने मिलता है। उनका मानना है कि आजकल की संतान बुजुर्गों को अधिक सम्मान नहीं देती।

8. 'बदलू' कहानी की दृष्टि से पात्र है और भाषा की बात (व्याकरण) की दृष्टि से संज्ञा है। किसी भी व्यक्ति, स्थान, वस्तु, विचार अथवा भाव को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा को तीन भेदों में बाँटा गया है -

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा, जैसे - लला, रज्जो, आम, काँच, गाय इत्यादि

(ख) जातिवाचक संज्ञा, जैसे - चरित्र, स्वभाव, वजन, आकार आदि द्वारा जानी जाने वाली संज्ञा।

(ग) भाववाचक संज्ञा, जैसे - सुंदरता, नाजुक, प्रसन्नता इत्यादि जिस में कोई व्यक्ति नहीं है और न आकार या वजन। परंतु उसका अनुभव होता है। पाठ से तीनों प्रकार की संज्ञाएँ चुनकर लिखिए।

उत्तर:- (क) व्यक्तिवाचक संज्ञा - बदलू, बेलन, मचिया।

(ख) जातिवाचक संज्ञा - आदमी, मकान, शहर।

(ग) भाववाचक संज्ञा - स्वभाव, रूचि, व्यथा।

9. गाँव की बोली में कई शब्दों के उच्चारण बदल जाते हैं। कहानी में बदलू वक्त (समय) को बखत, उम्र(वय/आयु) को उमर कहता है। इस तरह के अन्य शब्दों को खोजिए जिनके रूप में परिवर्तन हुआ हो, अर्थ में नहीं।

उत्तर:-

इंसान - मनुष्य

रंज - दुख

गम - मायूसी

ज़िंदगी - जीवन

औलाद - संतान

पाठ 3

बस की यात्रा

हरिशंकर परसाई

यह यात्रा वृतांत 'व्यंग्यात्मक शैली' में लिखा गया है । इसमें बताया गया है कि प्राइवेट बस कंपनियों के मालिक कैसी-कैसी खटारा बसे चलाते हैं । वे अधिकाधिक मुनाफ़ा कमाने के चक्कर में यात्रियों जान के साथ खिलवाड़ करने में भी संकोच नहीं करते हैं ।

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

गद्यांश 1

हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें ।पन्ना से इसी कम्पनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर के लिए रेल मिला देती है। सुबह घर पहुँच जाएँगे। हम में से दो को काम पर हाजिर होना था। इसीलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना जरुरी था।लोगों ने सलाह दी कि समझदार लोग इस शाम वाली बस से सफर नहीं करते ।

1. बस की यात्रा पाठ के लेखक कौन है ?

उत्तर- हरिशंकर परसाई ।

2. लेखक और उसके मित्र कितने बजे की बस पकड़ना चाहते थे ?

उत्तर- लेखक और उसके मित्र शाम चार बजे की बस पकड़ना चाहते थे ।

3. लेखक सतना से कहाँ जाने वाली रेल पकड़ना चाहते थे ?

उत्तर- लेखक सतना से जबलपुर जाने वाली ट्रेन पकड़ना चाहते थे ।

4. कितने लोगों को सुबह काम पर हाजिर होना था ?

उत्तर- दो लोगों को सुबह कम पर हाजिर होना था।

5 लोगों ने क्या सलाह दी ?

उत्तर- लोगों ने सलाह दी कि इस शाम वाली बस में सफ़र नहीं करना चाहिए ।

गद्यांश 2

इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया। ऐसा , जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं । कांच बहुत कम बचे थे , जो बचे थे उनसे ह में बचना था। हम फौरन खिड़की से दूर सरक गए । इंजन चल रहा था। हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है।

1 इंजन स्टार्ट होने के लिए सचमुच शब्द का प्रयोग क्यों किया गया है?

उत्तर- बस की हालत बहुत ख़राब थी उसे देखकर लग नहीं रहा था की बस स्टार्ट हो पाएगी इसलिए इस विस्म्यादि बोधक शब्द सचमुच का प्रयोग किया गया है।

2 सारी बस इंजन लग रही थी इसका क्या कारण था ?

उत्तर- बस के स्टार्ट होने पर बस भी इंजन की तरह हिलने लग गयी इसलिए सारी बस इंजन की तरह लग रही थी।

3 बचे काँच से बचने के लिए लेखक ने क्या किया ?

उत्तर- बचे काँच से बचने के लिए लेखक खिड़कियों से दूर हो गया ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न1 लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा क्यों जग गयी ?

उत्तर- बस का टायर पंक्चर हो गया जिससे बस जोर से हिलकर रुक गयी। अगर यह बस तेज गति से चल रही होती तो अ वश्य ही उछल कर नाले में गिर जाती ऐसे में लेखक ने कम्पनी के हिस्सेदार की ओर श्रद्धा से देखा ये श्रद्धा इसलिए जगी क्योंकि हिस्सेदार केवल अपने स्वार्थ हेतु लाचार था।

प्रश्न 2. लेखक पेड़ों को दुश्मन क्यों समझ रहा था?

उत्तर- लेखक को हर पेड़ से डर लग रहा था और ह र पेड़ उसे अपना दुश्मन दिखाई दे रहा था कारन यह था कि बस को जबरदस्ती चलाया जा रहा था कभी भी उसका ब्रेक फेल हो सकता था और कभी भी उसकी पेड़ से टक्कर हो सकती थी ।

प्रश्न 3. बस की यात्रा पाठ का मूलभाव क्या है ?

उत्तर- यह एक व्यंग्यात्मक रचना है इसके माध्यम से ले खक यह बताना चाहता है कि समयानुसार वस्तुओं में नवीनीकरण की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 4. बस की यात्रा आज के समाज में भी कैसे सार्थक है ?

उत्तर- क्योंकि आज भी हम कई बार देखते हैं की सड़क पर पुराने वाहन धडाधड चल रहे हैं मालिकों को लोगों की जान की परवाह नहीं होती और वे अपने स्वार्थ हेतु मनमानी करते रहते हैं ।

अतिरिक्त प्रश्न

1.यह पाठ किस शैली में लिखा गया है ?

उत्तर- हास्य व्यंग्य शैली में

2. असहयोग और सविनय अवज्ञा क्या हैं ?

उत्तर- स्वाधीनता आंदोलनए यहाँ बस के अंगों का मिलकर कार्य न कर पाने की स्थिति ।

3. आगा पीछा में कौन सा समास है ?

उत्तर- आगा और पीछा- द्वंद्व समास

4. फर्स्ट क्लास शब्द किस भाषा का है ?

उत्तर- अंग्रेजी का

5.समझदार आदमी में समझदार शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है ?

उत्तर- गुणवाचक विशेषण

कारण बताएँ

1. "मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा।"

लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा क्यों जग गई?

उत्तर:- लेखक के मन में बस कंपनी के हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा इसलिए जाग गई कि वह टायर की स्थिति से परिचित होने के बावजूद भी बस को चलाने का साहस जुटा रहा था। कंपनी का हिस्सेदार अपनी पुरानी बस की खूब तारीफ़ कर रहा था। अर्थ मोह की वजह से आत्म बलिदान की ऐसी भावना दुर्लभ थी जिसे देखकर लेखक हतप्रभ हो गया और उसके प्रति उनके मन में श्रद्धा भाव उमड़ता है।

2. "लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते।"

लोगों ने यह सलाह क्यों दी?

उत्तर:- लोगों ने लेखक को यह सलाह इसलिए दी क्योंकि वे जानते थे की बस की हालत बहुत खराब है। बस का कोई भरोसा नहीं है कि यह कब और कहाँ रूक जाए , शाम बीतते ही रात हो जाती है और रात रास्ते में कहाँ बितानी पड़ जाए, कुछ पता नहीं रहता। उनके अनुसार यह बस डाकिन की तरह है।

3. "ऐसा जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं। " लेखक को ऐसा क्यों लगा?

उत्तर:- जब बस चालक ने इंजन स्टार्ट किया तब सारी बस झनझनाने लगी। लेखक को ऐसा प्रतीत हुआ कि पूरी बस ही इंजन है। मानो वह बस के भी तर न बैठकर इंजन के भीतर बैठा हुआ हो। अर्थात् इंजन के स्टार्ट होने पर इंजन के पुर्जो की भांति बस के यात्री हिल रहे थे।

4. "गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।" लेखक को यह सुनकर हैरानी क्यों हुई?

उत्तर:- बस की वर्तमान स्थिति देखते हुए इस प्रकार का आश्चर्य व्यक्त करना स्वाभाविक था। देखने से लग नहीं रहा था कि बस चलती भी होगी परन्तु जब लेखक ने बस के हिस्सेदार से पूछा तो उसने कहा चलेगी ही नहीं, अपने आप चलेगी।

5. "मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था।" लेखक पेड़ों को अपना दुश्मन क्यों समझ रहा था?

उत्तर:- बस की जर्जर अवस्था से लेखक को ऐसा महसूस हो रहा था कि बस की स्टीयरिंग कहीं भी टूट सकती है तथा ब्रेक फेल हो सकता है। ऐसे में लेखक को डर लग रहा था कि कहीं उसकी बस किसी पेड़ से टकरा न जाए। एक पेड़ निकल जाने पर वह दूसरे पेड़ का इंतज़ार करता था कि बस कहीं इस पेड़ से न टकरा जाए। यही वजह है कि लेखक को हर पेड़ अपना दुश्मन लग रहा था।

6. 'सविनय अवज्ञा आंदोलन ' किसके नेतृत्व में , किस उद्देश्य से तथा कब हुआ था ? इतिहास की उपलब्ध पुस्तकों के आधार पर लिखिए।

उत्तर:- 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' महात्मा गांधी के नेतृत्व में 1930 में अंग्रेज़ी सरकार से असहयोग करने तथा पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए किया गया था।

7. सविनय अवज्ञा का उपयोग व्यंग्यकार ने किस रूप में किया है? लिखिए।

उत्तर:- 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' 1930 में सरकारी आदेशों का पालन न करने के लिए किया था।इसमें अंग्रेज़ी सरकार के साथ सहयोग न करने की भावना थी।

लेखक ने 'सविनय अवज्ञा' का उपयोग बस के सन्दर्भ में किया है। वह इस प्रतीकात्मक भाषा के माध्यम से यह बताना चाह रहा है कि बस विनय पूर्वक अपने मालिक व यात्रियों से उसे स्वतंत्र करने का अनुरोध कर रही है।

• भाषा की बात

8. बस, वश, बस तीन शब्द हैं - इनमें बस सवारी के अर्थ में , वश अधीनता के अर्थ में , और बस पर्याप्त (काफी) के अर्थ में प्रयुक्त होता है,

जैसे - बस से चलना होगा।

मेरे वश में नहीं है।

अब बस करो।

उपर्युक्त वाक्यों के समान वश और बस शब्द से दो-दो वाक्य बनाइए।

उत्तर:- वश - आज-कल के बच्चों को समझाना सबके वश की बात नहीं।

वश - भगवान की करनी मनुष्य के वश में नहीं।

बस - बस करो, कितना खाओगे?

बस - बस करो, इतना काफी है।

9. "हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है।"

ऊपर दिए गए वाक्यों में ने , की, से आदि वाक्य के दो शब्दों के बीच संबंध स्थापित कर रहे हैं। ऐसे शब्दों को कारक कहते हैं। इसी तरह दो वाक्यों को एक साथ जोड़ने के लिए 'कि' का प्रयोग होता है। कहानी में से दोनों प्रकार के चार वाक्यों को चुनिए।

उत्तर:- कारक शब्द से निर्मित वाक्य -

1 यह समझ में नहीं आता कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

2 नई नवेली बसों से ज़्यादा विश्वसनीय है।

3 यह बस पूजा के योग्य थी।

4 बस कंपनी के एक हिस्सेदार भी उसी बस में जा रहे थे।

10. "हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गए। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी।"

दिए गए वाक्यों में आई 'सरकना' और 'रेंगना' जैसी क्रियाएँ दो प्रकार की गतियाँ दर्शाती हैं। ऐसी कुछ और क्रियाएँ एकत्र कीजिए जो गति के लिए प्रयुक्त होती हैं , जैसे - घूमना इत्यादि। उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर:- टहलना - दादाजी को टहलना अच्छा लगता है।

चलना - चलना सेहत के लिए बहुत लाभदायक है।

11. "काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे, उनसे हमें बचना था।"

इस वाक्य में 'बच' शब्द को दो तरह से प्रयोग किया गया है। एक 'शेष' के अर्थ में और दूसरा 'सुरक्षा' के अर्थ में।

नीचे दिए गए शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करके देखिए। ध्यान रहे, एक ही शब्द वाक्य में दो बार आना चाहिए और शब्दों के अर्थ में कुछ बदलाव होना चाहिए।

(क) जल (ख) हार

उत्तर:- (क) जल - मीना गरम जल से बुरी तरह जल गई।

(ख) हार - यह प्रतियोगिता के इस पड़ाव में जिसकी जीत होगी उसे मोतियों का हार मिलेगा और जिसकी हार होगी वह प्रतियोगिता के बाहर हो जाएगा।

12. बोलचाल में प्रचलित अंग्रेजी शब्द 'फर्स्ट क्लास' में दो शब्द हैं - फर्स्ट और क्लास। यहाँ क्लास का विशेषण है फर्स्ट। चूँकि फर्स्ट संख्या है , फर्स्ट क्लास संख्यावाचक विशेषण का उदाहरण है। 'महान आदमी' में किसी आदमी की विशेषता है महान। यह गुणवाचक विशेषण है। संख्यावाचक विशेषण और गुणवाचक विशेषण के दो-दो उदाहरण खोजकर लिखिए।

उत्तर:- संख्यावाचक विशेषण - चार, आठ, दस

गुणवाचक विशेषण - चाँदनी रात, समझदार आदमी

पाठ 4

हम दीवानों की क्या हस्तीए

भगवतीचरण वर्मा

इस कविता में दीवाने अर्थात मस्त जीने वाले उन वीरों की मनोदशा का वर्णन हैं, जो मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए अपनी जान हथेली पर लिए फिरते हैं । यह कविता देश को आजादी मिलने से पहले लिखी गई है । देश को आजाद कराने वाले मनमौजी स्वभाव के हैं। ये वे वीर हैं , जो देश को आजाद कराने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने की भावना रखते हैं। वे लोगों की मुसीबतें तथा दुःख लेने और अपनी खुशियाँ देने का प्रयास करते हैं। वे दुखों तथा अभाव ग्रस्त लोगों के बीच अपना प्यार लुटाकर आगे बढ़ जाते हैं । वे स्थायी रूप से कहीं नहीं रहते ।

काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

हम दीवानों की क्या हस्ती
हैं आज यहाँएकल वहाँ चले
मस्ती का आलम साथ चलाए
हम धूल उड़ाते जहाँ चले ।
आए बनकर उल्लास अभी
आँसू बनकर बह चले अभी
सब कहते ही रह गए अरे
तुम कैसे आए कहाँ चले ?

प्रश्न 1 कवि एवं कविता का नाम लिखिए ।

उत्तर- भगवतीचरण वर्मा व दीवानों की हस्ती

प्रश्न 2 कवि के अनुसार किसकी हस्ती नही है ?

उत्तर- दीवानों की

प्रश्न 3 कवि ने दीवानों के आने और जाने की तुलना किससे की है ?

उत्तर- कवि के अनुसार दीवाने प्रसन्नता और उल्लास के रूप आते है और आँसू के रूप में बह जाते हैं।

प्रश्न 4 कवि ने दीवानों शब्द का प्रयोग किस के लिए किया है ?

उत्तर- फक्कड़ लोगों के लिए

प्रश्न 5. तुम कैसे आए पंक्ति में तुम शब्द किसके लिए आया है ?

उत्तर- कवि के लिए

प्रश्न.2. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए

हम भिखमंगों की दुनिया में स्वछंद लुटाकर प्यार चले
हम एक निशानी-सी उर पर ले असफलता का भर चले।
अब अपना और पराया क्या ?
आबाद रहें रुकनेवाले!
हम स्वयं बंधे थे और स्वयं
हम अपने बंधन तोड़ चले।

1. कविता तथा कवि का नाम लिखिए ।

उत्तर- दीवानों की हस्ती, भगवती चरण वर्मा

2. कवि दुनिया में प्यार किस प्रकार लुटाकर जा रहा है ?

उत्तर- स्वछंदरूप से

3. हृदय का समानार्थी शब्द छाँटकर लिखिए।

उत्तर- उर

4. कवि ने लोगों के लिए क्या कामना की है ?

उत्तर- 4 कवि ने लोगो के लिए आबादएवं खुश रहने की कामना की है।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कवि ने अपने आने को "उल्लास" और जाने को "आँसूं" बनकर बह जाना क्यों कहा है ?

उत्तर- कवि ने अपने आने को "उल्लास" इसलिए कहा है। क्योंकि उसके आने से लोगों के मन और चित्त दोनों खुश हो जाते है। लोगों के दिलों में प्र सन्नता की कलियाँ खिल उठती है। दूसरी तरफ उसके जाने से लोगों के मन में दुःख उत्पन्न होता है। लोग उसकी कमी को अनुभव करते है। इसलिए कवि ने स्वयं को आँसू बनकर बह जाना कहा है ?

प्रश्न 2. कवि लोगों से क्या पूछने के लिए मना करता है ?

उत्तर- कवि लोगों से उसके आने और जाने के बारे में पूछने को मना करता है। वह चाहता है कि वह जहाँ भी जा रहा है । उसके बारे कुछ न पूछे। उसे तो केवल चलना है । इसलिए वह लगातार चले जा रहा है ।

प्रश्न 3 जीवन में मस्ती होनी चाहिएए लेकिन कब मस्ती हानिकारक हो सकती है ? सहपाठियों के बीच चर्चा कीजिए ।

उत्तर- यह सही बात है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में मस्ती होनी चाहिए। प्रत्येक आयु में मस्ती अलग.अलग प्रकार की हो सकती है। छोटे बचों के लिए खेलना . कूदनाएकाम न करना आदि क्रियाए ही मस्ती है। युवा वर्ग अपनी क्रियाओं व मस्ती भरे व्यवहार से समा ज को नवीन शिक्षा भी प्रदान करता है। लेकिन अनियंत्रित मस्ती हानिकारक हो सकती है। यह मानव को अपने पथ से भटका देती है। मैं उस प्रकार की मस्ती का लेना चाहता हूँ जो समाज एवं देश को नया पथ व नया ज्ञान प्रदान करने का काम करती है ।

अतिरिक्त प्रश्न

1. दीवानें एक स्थान पर क्यों नहीं टिकते ?

उत्तर- देश की आजादी के लिए अंग्रेजों के खिलाफ योजनाएँ बनाने के लिए दीवाने घूमते रहते थे।

2. दीवानों की दो विशेषताएँ बताओ ।

उत्तर-

क.देश की सेवा करना ।

ख.लोगों को खुशियों देना ।

3 .एक निशानी-सी उर पर में कौन सा अलंकार है ?

उत्तर- उपमा अलंकार

4. असफलता शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय बताओ ।

उत्तर- अ- उपसर्ग, सफल-मूल शब्द, प्रत्यय- ता

5.आबाद रहें रहने वाले का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- दीवानें स्वयं तो एक जगह रुककर नहीं रहते किन्तु देशवासियों के लिए वे हँसी- खुशी जीवन बिताने की कामना करते हैं ।

अनुमान से :-

1. कवि ने अपने आने को 'उल्लास' और जाने को
'आँसू बनकर बह जाना' क्यों कहा है?

उत्तर:- कवि ने अपने आने को उल्लास इसलिए कहता है क्योंकि जहाँ भी वह जाता है मस्ती का आलम लेकर जाता है। वहाँ लोगों के मन प्रसन्न हो जाते हैं।

पर जब वह उस स्थान को छोड़ कर आगे जाता है तब उसे तथा वहाँ के लोगों को दुःख होता है। विदाई के क्षणों में उसकी आखों से आँसू बह निकलते हैं।

2. भिखमंगों की दुनिया में बेरोक प्यार लुटानेवाला कवि ऐसा क्यों कहता है कि वह अपने हृदय पर असफलता का एक निशान भार की तरह लेकर जा रहा है? क्या वह निराश है या प्रसन्न है?

उत्तर:- यहाँ भिखमंगों की दुनिया से कवि का आशय है कि यह दुनिया केवल लेना जानती है देना नहीं। कवि ने भी इस दुनिया को प्यार दिया पर इसके बदले में उसे वह प्यार नहीं मिला जिसकी वह आशा करता है। कवि निराश है , वह समझता है कि प्यार और खुशियाँ लोगों के जीवन में भरने में असफल रहा। दुनिया अभी भी सांसारिक विषयों में उलझी हुई है।

3. कविता में ऐसी कौन-सी बात है जो आपको सबसे अच्छी लगी?

उत्तर:- कविता में कवि का जीवन के प्रति दृष्टिकोण अच्छा लगा। कवि कहते है कि हम सबके सुख-दुःख एक है तथा हमें एक साथ ही इन सुखों और दुखों को भोगना पड़ता है। हमें दोनों परिस्थितियों का सामना समान भाव से करना चाहिए। ऐसी दृष्टिकोण रखनेवाला व्यक्ति ही सुखी रह सकता है।

• भाषा की बात

4. संतुष्टि के लिए कवि ने 'छककर' 'जी भरकर' और 'खुलकर' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। इसी भाव को व्यक्त करनेवाले कुछ और शब्द सोचकर लिखिए, जैसे - हँसकर, गाकर।

उत्तर:- 1. खींचकर

2. पीकर

3. मुस्कराकर

4. देकर

5. मस्त होकर

6. सराबोर होकर

पाठ 5

चिठ्ठियों की अनोखी दुनिया

अरविन्द कुमार सिंह

प्रस्तुत पाठ में चिट्ठियों की अनूठी दुनिया से हमारा परिचय कराया गया है। इसके अलावा पत्रों का महत्त्व, सभ्यता के विकास में उनका योगदान, इस वैज्ञानिक युग में भी उनकी महत्ता, ग्रामीण जीवन में पत्रों की अतिशयमहत्ता का रोचक वर्णन किया गया है।

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए

गद्यांश 1

पत्रों की दुनिया भी अजीबो गरीब है, और उसकी उपयोगिता हमें शा से बनी रही है । पत्र जो काम कर सकते हैं , वह संचार का आधुनिकतम साधन नहीं कर सकता । पत्र जैसा संतोष फोन या एस.एम.एस.का संदेश कहाँ दे सकता है। पत्र एक नया सिलसिला शुरू करते हैं और राजनीति साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में तमाम विवाद और नई घटनाओं की जड़ भी पत्र ही होते है

प्रश्न 1 एस.एम.एस.क्या है ?

उत्तर- एस.एम.एस.पत्र का आधुनिकतम रूप है जो मोबाइल द्वारा प्रेषित किया जाता हैअर्थात सरल मोबाइल संदेश।

प्रश्न 2 उपयोगिता शब्द से प्रत्यय अलग कीजिए ।

उत्तर- उपयोग +इ +ता

प्रश्न 3 आपके विचार से पत्र एक नया सिलसिला कैसे शुरू करते हैं ?

उत्तर- पत्रों के माध्यम से हम अपने ज्ञान और भावों को बाँटते हैं जिससे जीवन में मिठास आती है और एक नया सिलसिला शुरु होता है ।

प्रश्न 4 पत्र का संदेश बेहतर हैं या एस.एम.एस.का और क्यों ?

उत्तर- पत्र का संदेश बेहतर क्योंकि इसे हम लम्बे समय तक सहेजकर रख सकते हैं ।

गद्यांश 2

अगर आज जैसे संचार साधन होते तो पंडित नेहरु अपनी पुत्री इंदिरा गांधी को फोन करते , पर तब पिता के पत्र पुत्री के नाम नहीं लिखे जाते जो देश के करोड़ो लोगो को प्रेरणा देते हैं। पत्रों को तो आप सहेज कर रख लेते हैं, पर एस.एम.एस.संदेशो को आप जल्दी ही भूल जाते हैं। कितने संदेशों को आप सहेज कर रख सकते है? तमाम महान हस्तियों की तो सबसे बड़ी यादगार या धरोहर उनके द्वारा लिखे गए पत्र ही हैं। भारत में इस श्रेणी में राष्ट्र पिता महात्मा गांधी को सबसे आगे रखा जा सकता है। दुनिया के तमाम संग्रहालय जानी मानी हस्तियों के पत्रों का अनूठा संकलन भी हैं ।

प्रश्न 1 पंडित नेहरु ने किसे और किस नाम से पत्र लिखा ?

उत्तर- पंडित नेहरु ने अपनी पुत्री इंदिरा को 'पिता के पुत्र पुत्री के नाम' से पत्र लिखा ।

प्रश्न 2 पत्र और एस.एम.एस.संदेशों में क्या अंतर हैं ?

उत्तर- पत्रों को सहेजकर रखा जा सकता है जबकि,एस,एम,एस को सहेजकर नहीं रखा जा सकता ।

प्रश्न 3 महान हस्तियों के पत्र धरोहर के समान क्यों है ?

उत्तर- आज भी लोग हस्तियों के पत्रों को पढकर प्रेरणा लेते हैं इसलिए हस्तियों के पत्र धरोहर के सामान हैं ।

प्रश्न 4 महान हस्तियों के पत्रों का संकलन कहाँ रखा गया है और क्यों ?

उत्तर- हस्तियों के पत्रों को संग्रहालयों में रखा गया है ताकि लोग उन्हें पढ़ें और उनसे सीख ले सकें ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 पत्र जैसा संतोष फोन या,एस.एम.एस.का संदेश क्यों नहीं दे सकता ?

उत्तर- फोन या,एस.एम.एस. के संदेशो को लोग शीघ्र ही भूल जाते हैं। फ़ोन पर की गई बातोँ और एस.एम.एस.को लम्बे समय तक बचाकर रख पाना भीएककठिन कार्य है । इसके अतिरिक्त आज भी देश के बहुत से जिले या गाँव ऐसे है। जहाँ दूरभाष सेवा उपलब्ध नहीं है। जबकि प्रत्येक गाँव और कस्बे में स्थापित है। इसलिए पत्र जैसा संतोष फ़ोन या,सएमएस का संदेश नहीं दे सकते।

प्रश्न 2 पत्र धरोहर हो सकते हैं लेकिन, एस.एम.एस. क्यों नहीं ?

उत्तर- आज पत्र अनेक संकलनो के रूप में देखे जा सकते हैं। पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम और निराला के पत्र हमें धरोहर के रूप में देखने को मिलते हैं। एस .एम.एस.को संभाल कर रखना कठिन है। दूसरा इनके द्वारा अपने विचारों को विस्तृत रूप से प्रस्तुत करना संभव नहीं है।

इसलिए पत्र धरोहर हो सकते है लेकिन एस.एम.एस.नहीं ।

प्रश्न 3 पत्र लेखन की कला के विकास के लिए क्या-क्या प्रयास हुए? लिखिए।

उत्तर- पत्र संस्कृति विकसित करने के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों में पत्र लेखन का विषय शामिल किया गया। विश्व डाक संघ की ओर से 16 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों के लिए पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का सिलसिला सन 1972 से शुरू किया गया। महानगरों में संचार साधनों के अत्यधिक विकास के कारण पत्रों की आवाजाही प्रभावित हुई है। किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी पत्रों का खूब प्रचलन है।

प्रश्न 4 लेखक ने डाकिए को देवदूत क्यों कहा है ?

उत्तर- भारत में आज भी अनेक ऐसे स्थानों पर जहाँ टेलीफोन, ई मेल जैसी सुविधाओं का अभाव है । डाकिया पत्र पहुँचाने का काम करता है। उसी के माध्यम से लोग दूरस्थ स्थानों पर रहने वाले अपने सगें- संबंधियों के दुःख.सुख का समाचार प्राप्त करते है। वे लो ग डाकिए को किसी देवदूत से कम नही मानते इसलिए लेखक ने भी डाकिए को देवदूत कहा है।

अतिरिक्त प्रश्न

प्रश्न 1 एस.एम.एस. क्या है ?

उत्तर- सरल मोबाइल संदेश, लघु संदेश स्कीम लिखित रूप में मोबाइल पर भेजा या पाया गया संदेश ।

प्रश्न 2 पत्रों की दुनिया अजीबों गरीब क्यों है ?

उत्तर- आज के युग में भी ये अपनी उपयोगिता बनाए हुए है। यह लिखित होने से स्थायी व अधिक विश्वसनीय है।

प्रश्न 3 पत्र किन किन क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं ?

उत्तर- राजनीति, कलाए, साहित्य आदि ।

प्रश्न 4 सैनिकों को पत्रों की उत्सुकता औरों से अधिक क्यों होती है ?

उत्तर- सैनिकों को पत्रों की उत्सुकता औरों से अधिक इसलिए होती है क्योंकि सैनिक देश के दूर- दराज क्षेत्र में रहते हैं जहाँ संदेश के अन्य साधन सुगमता से उपलब्ध नहीं होते। वहाँ भी पत्र उन्हें घर के सुख दुःख की ख़बरें देते रहते हैं ।

प्रश्न 5 चिट्ठी पत्री में कौन सा समास है ?

उत्तर- चिट्ठी और पत्री में द्वंद्व समास है।

1. पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश क्यों नहीं दे सकता?

उत्तर:- पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश नहीं दे सकता क्योंकि फोन , एसएमएस द्वारा केवल कामकाजी बातों को संक्षिप्त रूप से व्यक्त कर सकते हैं। पत्रों द्वारा हम अपने मनोभावों को खुलकर व्यक्त कर सकते हैं। पत्रों से आत्मीयता झलकती है। इन्हें अनुसंधान का विषय भी बनाया जा सकता है। ये कई किताबों का आधार हैं। पत्र राजनीति ,साहित्य तथा कला क्षेत्र में प्रगतिशील आंदोलन के कारण बन सकते हैं। यह क्षमता फोन या एसएमएस द्वारा दिए गए संदेश में नहीं।

2. पत्र को खत, कागद, उत्तरम्, जाबू, लेख, कडिद, पाती, चिट्ठी इत्यादि कहा जाता है। इन शब्दों से संबंधित भाषाओं के नाम बताइए।

उत्तर:-

1. खत - उर्दू
2. कागद - कन्नड़
3. उत्तरम् - तेलूगु
4. जाबू - तेलूगु
5. लेख - तेलूगु
6. कडिद - तमिल
7. पाती - हिन्दी
8. चिट्ठी - हिन्दी
9. पत्र - संस्कृत

3. पत्र लेखन की कला के विकास के लिए क्या-क्या प्रयास हुए? लिखिए।

उत्तर:- पत्र लेखन की कला को विकसित करने के लिए दुनिया के सभी देशों द्वारा पाठयक्रमों में पत्र लेखन का विषय शामिल किया गया। विश्व डाक संघ की ओर से 16 वर्ष से कम आयुवर्ग के बच्चों के लिए पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का कार्यक्रम सन् 1972 से शुरू किया गया।

4. पत्र धरोहर हो सकते हैं लेकिन एसएमएस क्यों नहीं? तर्क सहित अपना विचार लिखिए।

उत्तर:- पत्र व्यक्ति की स्वयं की हस्तलिपि में होते हैं, जो कि प्रियजन को अधिक संवेदित करते हैं। हम जितने चाहे उतने पत्रों को धरोहर के रूप में समेट कर रख सकते हैं जबकि एसएमएस को मोबाइल में सहेज कर रखने की क्षमता ज़्यादा समय तक नहीं होती है। एसएमएस को जल्द ही भुला दिया जाता है। पत्र देश, काल, समाज को जानने का साधन रहा है। दुनिया के तमाम संग्रहालयों में जानी- मानी हस्तियों के पत्रों का अनूठा संकलन भी है।

5. क्या चिट्ठियों की जगह कभी फैक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल ले सकते हैं?

उत्तर:- पत्रों का चलन न कभी कम हु आ था, न कभी कम होगा। चिट्ठियों की जगह कोई नहीं ले सकता है। पत्र लेखन एक साहित्यिक कला है परन्तु फेक्स , ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल जैसे तकनीकी माध्यम केवल काम-काज के क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं। आज ये आवश्यकताओं में आते हैं फिर भी ये पत्र का स्थान नहीं ले सकते हैं।

6. किसी के लिए बिना टिकट सादे लिफ़ाफ़े पर सही पता लिखकर पत्र बैरंग भेजने पर कौन- सी कठिनाई आ सकती है? पता कीजिए।

उत्तर:- बिना टिकट सादे लिफ़ाफ़े पर सही पता लिखकर पत्र बैरंग भेजने पर पत्र को पाने वाले व्यक्ति को टिकट की धनराशि जुर्माने के रूप में देनी होगी।

7. पिन कोड भी संख्याओं में लिखा गया एक पता है, कैसे?

उत्तर:- पिन कोड किसी खास क्षेत्र को संबोधित करता है कि यह पत्र किस राज्य के किस क्षेत्र का है। इसके साथ व्यक्ति का नाम और नंबर आदि भी लिखना पड़ता है।

पिन कोड का पूरा रूप है पोस्टल इंडेक्स नंबर। यह 6 अंको का होता है। हर एक का खास स्थानीय अर्थ होता है, जैसे - 1 अंक राज्य, 2 और 3 अंक उपक्षेत्र, अन्य अंक क्रमशः डाकघर आदि के होते है। इस प्रकार पिन कोड भी संख्याओं में लिखा गया एक पता है।

8. ऐसा क्यों होता था कि महात्मा गांधी को दुनिया भर से पत्र 'महात्मा गांधी-इंडिया' पता लिखकर आते थे?

उत्तर:- महात्मा गांधी को दुनिया भर से पत्र 'महात्मा गांधी- इंडिया' पता लिखकर आते थे क्योंकि महात्मा गांधी अपने समय के सर्वाधिक लोकप्रिय व प्रसिद्ध व्यक्ति थे। वे भारत गौरव थे। गांधी जी देश के किस भाग में रह रहे हैं यह देशवासियो को पता रहता था। अत: उनको पत्र अवश्य मिल जाता था।

• भाषा की बात

9. किसी प्रयोजन विशेष से संबंधित शब्दों के साथ पत्र शब्द जोड़ने से कुछ नए शब्द बनते हैं , जैसे - प्रशस्ति पत्र, समाचार पत्र। आप भी पत्र के योग से बननेवाले दस शब्द लिखिए।

उत्तर:-

1. प्रार्थना पत्र
2. मासिक पत्र
3. छः मासिक पत्र
4. वार्षिक पत्र
5. दैनिक पत्र
6. साप्ताहिक पत्र
7. पाक्षिक पत्र
8. सरकारी पत्र
9. साहित्यिक पत्र
10. निमंत्रण पत्र

10. 'व्यापारिक' शब्द व्यापार के साथ 'इक' प्रत्यय के योग से बना है। इक प्रत्यय के योग से बनने वाले शब्दों को अपनी पाठ्यपुस्तक से खोजकर लिखिए।

उत्तर:- इक प्रत्यय के योग से बनने वाले शब्द -

1. स्वाभाविक
2. साहित्यिक
3. व्यवसायिक
4. दैनिक
5. प्राकृतिक

6. जैविक
7. प्रारंभिक
8. पौराणिक
9. ऐतिहासिक
10.सांस्कृतिक
11. दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं;जैसे - रवीन्द्र = रवि + इन्द्र। इस संधि में इ + इ = ई हुई है। इसे दीर्घ संधि कहते हैं। दीर्घ स्वर संधि के और उदाहरण खोजकर लिखिए। मुख्य रूप से स्वर संधियाँ चार प्रकार की मानी गई हैं - दीर्घ, गुण, वृद्धि और यण।
ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, आ आए तो ये आपस में मिलकर क्रमशः दीर्घ आ, ई, ऊ हो जाते हैं, इसी कारण इस संधि को दीर्घ संधि कहते हैं;जैसे - संग्रह + आलय = संग्रहालय, महा + आत्मा = महात्मा। इस प्रकार के कम-से-कम दस उदाहरण खोजकर लिखिए और अपने शिक्षक को दिखाइए।
उत्तर:-
1. गुरूपदेश = गुरू + उपदेश (उ + उ)
2. संग्रहालय = संग्रह + आलय (अ + आ)
3. हिमालय = हिम + आलय (अ + आ)
4. भोजनालय = भोजन + आलय (अ + आ)
5. स्वेच्छा= सु + इच्छा(उ + इ)
6. अनुमति = अनु + मति (उ + अ)
7. रवीन्द्र = रवि + इंद्र (इ + इ)
8. विद्यालय = विद्या + आलय (आ + आ)
9. सूर्य + उदय = सूर्योदय (अ + उ)
10. सदा + एव = सदैव (आ + ए)

पाठ 6

भगवान के डाकिए

रामधारी सिंह दिनकर

कवि पक्षी और बादल का सम्बन्ध मनुष्य से जोड़ते हुए कहता है कि ये दोनों भगवान के डाकिए हैं जिस प्रकार सरकारी डाकिए हमारे लिए हमारे प्रियजनों का सं देश लाते हैं , उसी प्रकार ये प्राकृतिक डाकिए भगवान का संदेश हमारे लिए लाते हैं। ये डाकिए किसी स्थान विशेष के लोगों के लिए संदेश लाते हैं। पक्षी आकाश में यहाँ -वहाँ भ्रमण करते रहते हैं तथा बादल उमड़- घुमड़ कर पृथ्वी का चक्कर लगाते हैं। इनका विचरण देखकर ऐसा लगता है कि ये भगवान के डाकिए हैं जो भगवान का संदेश लेकर सभी देशों अर्थात पूरी पृथ्वी के आस -पास घूम रहे हैं। वे यह संदेश मनुष्य में बाँटते हैं पर अपनी अज्ञानता के कारण मनुष्य उनका संदेश नहीं समझ पाता है। इन प्राकृतिक डाकियों की लाई चिट्ठियों को पर्वत , पेड़-पौधे और नदियाँ पढ़ती हैं। पेड़ -पौधे अपनी वायु , धरती अपनी सुगंध तथा नदियाँ अपना जल किसी सीमा विशेष में रहने वालों के लिए नहीं रखते हैं।
कव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

काव्यांश 1

पक्षी और बादल
ये भगवान के डाकिए हैं
जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं।
हम तो समझ नहीं पाते हैं
मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ
पेड़ पौधे पानी और पहाड़ बाँचते हैं।

प्रश्न 1 कवि और कविता और कविता का नाम लिखिए

उत्तर- कवि रामधारी सिंह दिनकर और कविता भगवान के डाकिए।

प्रश्न 2 कवि ने डाकिए किसे कहा है?

उत्तर- पक्षी और बादल को।

प्रश्न 3 पक्षी और बादल क्यों डाकिए कहलाते हैं?

उत्तर- क्योंकि पक्षी और बादल ईश्वर का संदेशएकस्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाते हैं ।

प्रश्न 4 इनके संदेश पढ़ने में कौन सक्षम होते हैं ?

उत्तर- पेड़ और पहाड़

प्रश्न 5 महादेश से क्या तात्पर्य है।

उत्तर- एकदेश से दूसरे देश।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. प्रकृति भगवान का संदेश जन जाती है इसके माध्यम से कवि का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- प्रकृति अर्थात पेड़ पौंधे , नदियाँ पहाड़ आदि भगवान का संदेश अर्थात एक दूसरे के प्रति प्रेम भाव रखना चाहिए इसके माध्यम से कवि का तात्पर्य है कि हमें देश की सीमाओं में बाँध कर नही रहना चाहिए ।

प्रश्न 2 पक्षी और बादल की चिठ्ठियों में पेड़ पौंधे पानी और पहाड़ क्या पढ़ पाते हैं ?

उत्तर- पक्षी और बादल की लाई हुई चिठ्ठियों से पेड़ पौंधे पानी और पहाड़ ईश्वर का दिया विश्वबं धुत्व का संदेश पढ़ लेते हैं वे ये एहसास करते हैं कि हवा व पक्षियों के पंखों से उड़ - उड़ कर आने वाली सुगंध और एकदेश के जल की भाप से बना बादल दूसरे देश में बरस कर विश्वबंधुत्व की भावना का प्रसार करते हैं जबकि मानव सीमाओं के बंधनों में बंधे होने के कारण यह कार्य नहीं कर सकता परन्तु वे बंधन मुक्त होने के कारन यह कार्य स्वतंत्र रूप से कर सकते हैं ।

अतिरिक्त प्रश्न

1. भगवान के डाकिए किसे कहा गया है ?

उत्तर- पक्षी और बादल को

2. एक देश की धरती दूसरे देश की धरती को क्या संदेश भेजती है ?

उत्तर- सुगंध

3. हवा के पर्यायवाची बताइए।

उत्तर- वायु, अनिल, समीर, पवन आदि ।

4. महादेश शब्द में कौन-सा समास है ?

उत्तर- कर्मधारय समास

5.सुगंध शब्द का विलोम कैसे बनाया जा सकता है ?

उत्तर- सु को हटाकर उसकी जगह दुर् उपसर्ग लगाकर ।

1. कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए क्यों बताया हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए इसलिए कहा है क्योंकि जिस प्रकार डाकिए संदेश लाने का काम करते हैं, उसी प्रकार पक्षी और बादल भगवान का संदेश हम तक पहुँचाते हैं। उनके लाए संदेश को हम भले ही न समझ पाए , पर पेड़, पौधे, पानी और पहाड़ उसे भली प्रकार पढ़- समझ लेतें हैं। जिस तरह बादल और पक्षी दूसरे देश में जाकर भी भेदभाव नहीं करते उसी तरह हमें भी आचरण करना चाहिए।

2. पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिट्ठियों को कौन-कौन पढ़ पाते हैं? सोच कर लिखिए।

उत्तर:- पक्षी और बादल द्वारा लायी गई चिट्ठियों को पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ पढ़ पाते हैं।

3. किन पंक्तियों का भाव है :

(क) पक्षी और बादल प्रेम, सद्भाव और एकता का संदेश एक देश से दूसरे देश को भेजते हैं।

(ख) प्रकृति देश-देश में भेद भाव नहीं करती। एक देश से उठा बादल दूसरे देश में बरस जाता है।

उत्तर:-

(क) पक्षी और बादल,

ये भगवान के डाकिए हैं,
जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं।
हम तो समझ नहीं पाते हैं
मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ
पेड़, पौधें, पानी और पहाड़
बाँचते हैं।

(ख)

और एक देश का भाप
दूसरे देश में पानी
बनकर गिरता है।

4. पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ क्या पढ़ पाते हैं?

उत्तर:- कवि का कहना है कि पक्षी और बादल भगवान के डाकिए हैं। जिस प्रकार डाकिए संदेश लाने का काम करते हैं, उसी प्रकार पक्षी और बादल भगवान का संदेश लाने का काम करते हैं। पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ भगवान के भेजे एकता और सद्भावना के संदेश को पढ़ पाते हैं। इसपर अमल करते नदियाँ समान भाव से सभी लोगों में अपने पानी को बाँटती है। पहाड़ भी समान रूप से सबके साथ खड़ा होता है। पेड़- पौधें समान भाव से अपने फल, फूल व सुगंध को बाँटते हैं, कभी भेदभाव नहीं करते।

5. "एक देश की धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है" - कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- एक देश की धरती अपने सुगंध व प्यार को पक्षियों के माध्यम से दूसरे देश को भेजकर सद्भावना का संदेश भेजती है। धरती अपनी भूमि में उगने वाले फूलों की सुगंध को हवा से ,पानी को बादलों के रूप में भेजती है। हवा में उड़ते हुए पक्षियों के पंखों पर प्रेम-प्यार की सुगंध तैरकर दूसरे देश तक पहुँच जाती है। इस प्रकार एक देश की धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है।

6. पक्षियों और बादल की चिट्ठियों के आदान-प्रदान को आप किस दृष्टि से देख सकते हैं?
उत्तर:- पक्षी और बादल की चिट्ठियों के आदान- प्रदान को हम प्रेम , सौहार्द और आपसी सद्भाव की दृष्टि से देख सकते हैं। यह हमें यहीं संदेश देते हैं।

7. आज विश्व में कहीं भी संवाद भेजने और पाने का एक बड़ा साधन इंटरनेट है। पक्षी और बादल की चिट्ठियों की तुलना इंटरनेट से करते हुए दस पंक्तियाँ लिखिए।
उत्तर:- पक्षी और बादल प्रकृति के अनुसार काम करते हैं किंतु , इंटरनेट मनुष्य के अनुसार काम करते है। बादल का कार्य प्रकृति-प्रेमी को प्रभावित करती है किंतु, इंटरनेट विज्ञानं प्रेमी को प्रभावित करती है। पक्षी और बादल का कार्य धीमी गति से होता है किंतु, इंटरनेट का कार्य तीव्र गति से होता है। इंटरनेट एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक बात पहुँचाने का ही सरल तथा तेज माध्यम है। इसके द्वारा हम किसी व्यक्तिगत रायों को जान सकते हैं किन्तु पक्षी और बादल की चिट्ठियाँ हमें भगवान का सं देश देते हैं। वे बिना भेदभाव के सारी दुनिया में प्रेम और एकता का संदेश देते हैं। हमें भी इंटरनेट के माध्यम से प्रेम और एकता और भाईचारा का संदेश विश्व में फैलाना चाहिए।
8. 'हमारे जीवन में डाकिए की भूमिका' क्या है? इस विषय पर दस वाक्य लिखिए।
उत्तर:- डाकिया' भारतीय सामाजिक जीवन की एक आधारभूत कड़ी है। डाकिया द्वारा डाक लाना , पत्रों का बेसब्री से इंतज़ार , डाकिया से ही पत्र पढ़वाकर उसका जवाब लिखवाना इत्यादि तमाम महत्त्वपूर्ण पहलू हैं, जिन्हें नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। उसके परिचित सभी तबके के लोग हैं। हमारे जी वन में डाकिए की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। भले ही अब कंप्यूटर और इ- मेल का ज़माना आ गया है पर, डाकिया का महत्त्व अभी भी उतना ही बना हुआ है जितना पहले था।
कई अन्य देशों ने होम-टू-होम डिलीवरी को खत्म करने की तरफ कदम बढ़ाये हैं , या इसे सुविधा-शुल्क से जोड़ दिया है, वहीं भारतीय डाकिया आज भी सुबह से शाम तक चलता ही रहता है। डाकिया कम वेतन पाकर भी अपना काम अत्यन्त परिश्रम और लगन के साथ संपन्न करता है। गर्मी , जाड़ा और बरसात का सामना करते हुए वह समाज की सेवा करता है। भारतीय डाक प्रणाली की गुडविल बनाने में उनका सर्वाधिक योगदान माना जाता है।

पाठ 7

क्या निराश हुआ जाए - हजारी प्रसाद द्विवेदी

आज कल के समाचार पत्रों में छप रही चोरी , भ्रष्टाचारी, हिंसा ,बेईमानी आदि की खबरों को पढ़ने से समाज में निराशा का वातावरण बना है। उस पर लेखक ने चिंता व्यक्त की। यद्यपि समाज में अच्छे और बुरे दोनों काम करने वाले लोग हैं। पर अच्छे काम करने वालों से प्रेरणा लेकर आशावादी होना चाहिए।
गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-
गद्यांश 1
यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले.भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ व फरेब का रोजगार करने वाले फल फूल रहे हैं । ईमानदारी को मूखर्ता का पयार्य समझा जाने लगा है। सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हि स्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है। भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया है। उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक गुण स्थिर भाव से बैठा हुआ है। वही चरम और परम है।

1. आजकल कैसा माहौल चल रहा है ?

उत्तर- आजकल निराशाजनकमाहौल चल रहा है ।

2. आजकल कौन फल फूल रहे हैं ?

उत्तर- आजकल झूठ और फरेब का व्यापार करने वाले लोग फल फूल रहे हैं

3. ईमानदारी का पर्याय किसे समझा जाने लगा है ?

उत्तर- ईमानदारी का पर्याय मूर्खता को समझा जाने लगा है ।

4. किसके बारे में लोगों की आस्था हिलने लगी है ?

उत्तर- जीवन के मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था हिलने लगी है ।

5. भारतवर्ष में चरम और परम इसे माना गया है ?

उत्तर- मानव के भीतर समाये महान गुणों को चरम और परम माना गया है ।

गद्यांश 2

दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को ,एक मात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैंकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं जिन्हें उजागर करने से लोक चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है ।

1 .पाठ और लेखक का नाम लिखिए ।

उत्तर- क्या निराश हुआ जाए, हजारी प्रसाद द्विवेदी

2. दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात क्यों नहीं है ?

उत्तर- क्योंकि दोषों को उजागर करने से ही उनको दूर किया जा सकता है तथा स्वस्थ समाज की नीव राखी जा सकती है ।

3 .लेखक को बुराई कहाँ मालूम पड़ती है ?

उत्तर- गुणों को उजागर न करने में लेखक को बुराई नजर आती है ।

4 .बुराई में रस लेने का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- बुराई में रस लेने का अर्थ है कि किसी की कमियों का मजाक नहीं बनाना चाहिए ।

5.अच्छी घटनायें उजागर करने का क्या परिणाम होता है ?

उत्तर- अच्छी घटनाएँ उजागर करने से समाज में अच्छाई का प्रचार होता है और सकारात्मक दृष्टि कोण पैदा होता है।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न1. लेखक ने स्वीकार किया है कि लोगों ने उन्हें भी धोखा दि या है । फिर भी वह निराश नही है। आपके विचार से इस बात का क्या कारण हो सकता है ?

उत्तर-लेखक का कहना कि आज भी भारत वर्ष में सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए है। रेलवे स्टेशन पर टिकट बाबू के द्वारा लेखक को ढूढ़कर नब्बे रुपये वापस करना तथा बस कंडक्टर द्वारा लेखक के बच्चों के लिए दूध और पानी लाना इसी बात प्रमाण है। इसलिए धोखा दिए जाने पर भी लेखक निराश नही है।

प्रश्न 2 लेखक ने लेख का शीर्षक क्या निराश हुआ जाए क्यों रखा होगा क्या आप इससे भी बेहतर शीर्षक सुझा सकते है ?

उत्तर- क्या निराश हुआ जाए पाठ शीर्षक से हम पूर्णरूप से सहमत है आज के युग में समाचार . पत्रों में भ्रष्टाचारए बेईमानी आदि के समाचारों को पढ़कर हमें निराश नही होना चाहिए। समाज में अभी भी सच्चाई और ईमानदारी है तथा मनुष्यता समाप्त नही हुई है। आशा की ज्योति बुझी नही है । अत : निराश होने की आवश्कता नही है।

अन्य शीर्षक ..... आशावादी दृष्टि कोण ।

प्रश्न 3. लेखक कंडक्टर के चरित्र से क्यों प्रभावित हुआ ?

उत्तर- बस कंडक्टर के चरित्र की प्रमुख विशेषता कर्तव्य पालन एवं दया भावना थी। उसने इंसानियत का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया बस ख़राब हो जाने के बाद कंडक्टर दूसरी बस लेने के लिए बस अड्डे चला गया। नई बस लेकर आते समय वह एक लोटे में पानी और दूध भी लेता आया। उसके व्यवहार से लेखक बहुत प्रभावित हुआ।उसे लगा कि अभी भी दया.भाव और मनुष्यता जीवित है।

प्रश्न4. क्या निराश हुआ जाए पाठ का मूल भाव क्या है ?

उत्तर- मनुष्य को कभी भी निराश नही होना चाहिए। समाज में अगर निराशा और अराजकता से काम करने वाले लोग है तो आशावादी दृष्टि कोण रखने वालो की भी कमी नही है।

अतिरिक्त प्रश्न

1 जीवन के महान मूल्य क्या हैं ? उन जीवन मूल्यों को किस प्रकार के कार्यों ने दबा दिया है ?

उत्तर- जीवन के महान मूल्य अपने काम के प्रति सच्चाईए ईमानदारी और कर्तव्य निष्ठा आदि हैं। इन जीवन मूल्यों को झूठए तथा फरेब का रोजगार करने वाले कामों ने दबा दिया है।

2 भारतवर्ष के लोग किन.किन भौतिक वस्तुओं के संग्रह को अधिक महत्त्व नहीं देते हैं ?

उत्तर- भारतवर्ष के लोग काम, क्रोध, लोभ और मोह आदि गुणों को संतुष्ट करने वाले कामों को अधिक महत्त्व नहीं देते हैं ।

3 भारतीय लोगो में किस बात को लेकर ऊपरी वर्ग के व्यक्तियों के प्रति भ्रान्तियाँ है ?

उत्तर- भारतीय लोगो में सेवा, ईमानदारी, सच्चाई ओर आध्यात्मिकता के मूल्यों को लेकर ऊपरी वर्ग के व्यक्तियों के प्रति भ्रांतियाँ है ।

1. लेखक ने स्वीकार किया है कि लोगों ने उन्हें भी धोखा दिया है फिर भी वह निराश नहीं हैं। आपके विचार से इस बात का क्या कारण हो सकता है?

उत्तर:- लेखक ने अपने व्यक्ति गत अनुभवों का वर्णन करते हुए कहा है कि उसने धोखा भी खाया है परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज मिलती है। पर उसका मानना है कि अगर वो इन धोखों को याद रखेगा तो उसके लिए विश्वास करना बेहद कष्टकारी होगा और ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण उनकी सहायता की है ,निराश मन को ढाँढस दिया है और हिम्मत बँधाई है।

टिकट बाबू द्वारा बचे हुए पैसे लेखक को लौटाना , बस कंडक्टर द्वारा दूसरी बस व बच्चों के लिए दूध लाना आदि ऐसी घटनाएँ हैं। इसलिए उसे विश्वास है कि समाज में मानवता ,प्रेम, आपसी सहयोग समाप्त नहीं हो सकते।

2. दोषों का पर्दाफ़ाश करना कब बुरा रूप ले सकता है?

उत्तर:- दोषों का पर्दाफ़ाश करना तब बुरा रूप ले सकता है जब हम किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लेते है या जब हमारे ऐसा करने से वे लोग उग्र रूप धारण कर किसी को हानि पहुँचाए।

3. आजकल के बहुत से समाचार पत्र या समाचार चैनल 'दोषों का पर्दाफ़ाश' कर रहे हैं। इस प्रकार के समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता पर तर्क सहित विचार लिखिए?

उत्तर:- इस प्रकार के पर्दा फाश से समाज में व्याप्त बुराईयों से , अपने आस-पास के वातावरण तथा लोगों से अवगत हो जाते हैं और इसके कारण समाज में जागरूकता भी आती है साथ ही समाज समय रहते ही सचेत और सावधान हो जाता हैं।

4. निम्नलिखित के संभावित परिणाम क्या-क्या हो सकते हैं? आपस में चर्चा कीजिए, जैसे - "ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है।"परिणाम-भ्रष्टाचार बढ़ेगा।

1. "सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है।" .....

2. "झूठ और फरेब का रोज़गार करनेवाले फल-फूल रहे हैं।" .....

3. "हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम।" .....

उत्तर:- 1. "सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। - तानाशाही बढ़ेगी

2. "झूठ और फरेब का रोज़गार करनेवाले फल-फूल रहे हैं।" - भ्रष्टाचार बढ़ेगा

3. "हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम।" - अविश्वास बढ़ेगा

5. लेखक ने लेख का शीर्षक 'क्या निराश हुआ जाए' क्यों रखा होगा? क्या आप इससे भी बेहतर शीर्षक सुझा सकते हैं?

उत्तर:- लेखक ने इस लेख का शीर्ष क 'क्या निराश हुआ जाए' उचित रखा है। आजकल हम अराजकता की जो घटनाएँ अपने आसपास घटते देखते रहते हैं। जिससे हमारे मन में निराशा भर जाती है। लेकिन लेखक हमें उस समय समाज के मानवीय गुणों से भरे लोगों को और उनके कार्यों को याद करने कहा हैं जिससे हम निराश न हो।

इसका अन्य शीर्षक 'हम निराशा से आशा' भी रख सकते हैं।

6. यदि 'क्या निराश हुआ जाए' के बाद कोई विराम चिहन लगाने के लिए कहा जाए तो आप दिए गए चिह्नों में से कौन-सा चिहन लगाएँगे? अपने चुनाव का कारण भी बताइए - , । . । ? ; - , ... ।

उत्तर:- 'क्या निराश हुआ जाए' के बाद मैं प्रश्न चिन्ह 'क्या निराश हुआ जाए?' लगाना उचित समझता हूँ। समाज में व्याप्त बुराइयों के बीच रहते हुए भी जीवन जीने के लिए सकारात्मक दृष्टि जरूरी है।

7. "आदर्शों की बातें करना तो बहुत आसान है पर उन पर चलना बहुत कठिन है। " क्या आप इस बात से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर:- "आदर्शों की बातें करना तो बहुत आसान है पर उन पर चलना बहुत कठिन है। " - मैं इस कथन से सहमत हूँ क्योंकि व्यक्ति जब आदर्शो की राह पर चलता है तब उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। असामाजिक तत्वों का अकेले सामना करना पड़ता है।

• भाषा की बात

8. दो शब्दों के मिलने से समास बनता है। समास का एक प्रकार है - द्वंद्व समास।

इसमें दोनों शब्द प्रधान होते हैं। जब दोनों भाग प्रधान होंगे तो एक- दूसरे में द्वंद्व (स्पर्धा, होड़) की संभावना होती है। कोई किसी से पीछे रहना नहीं चाहता,

जैसे - चरम और परम = चरम-परम, भीरु और बेबस = भीरू-बेबस। दिन और रात = दिन-रात।

'और' के साथ आए शब्दों के जोड़े को 'और' हटाकर (-) योजक चिह्न भी लगाया जाता है। कभी- कभी एक साथ भी लिखा जाता है।

द्वंद्व समास के बारह उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर:-

सुख और दुख	सुख-दुख
भूख और प्यास	भूख-प्यास
हँसना और रोना	हँसना-रोना
आते और जाते	आते-जाते
राजा और रानी	राजा-रानी
चाचा और चाची	चाचा-चाची
सच्चा और झूठा	सच्चा-झूठा
पाना और खोना	पाना-खोना
पाप और पुण्य	पाप-पुण्य
स्त्री और पुरूष	स्त्री-पुरूष
राम और सीता	राम-सीता
आना और जाना	आना-जाना

9. पाठ से तीनों प्रकार की संज्ञाओं के उदाहरण खोजकर लिखिए।

उत्तर:- जातिवाचक संज्ञा : बस, यात्री, मनुष्य, ड्राइवर, कंडक्टर,हिंदु , मुस्लिम, आर्य, द्रविड़, पति, पत्नी आदि।

भाववाचक संज्ञा : ईमानदारी, सच्चाई, झूठ, चोर, डकैत आदि।

पाठ 8

यह सबसे कठिन समय नहीं -जया जादवानी

इस पाठ में कवयित्री मन में आशावादी विचारधारा को लेकर चलने के लिए प्रेरित कर रही है। वे अनेक ऐसे उदहारण प्रस्तुत कर रही हैं, जिनमें निराश न होकर आशा की चमक दिखाई देती है ।

काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

नहीं यह सबसे कठिन समय नहीं !
अभी भी दबा है चिड़िया की
चोंच में तिनका
और वह उड़ने की तैयारी में है !
अभी भी झरती हुई पत्ती
थामने को बैठा है एक हाथ

1 चिड़िया ने चोंच में क्या दबा रखा है ?

उत्तर- तिनका

2 झरती हुई पत्ती को थामने के लिए कौन तैयार है ?

उत्तर- एक हाथ

3. वह तिनकों का क्या करती होगी ?

उत्तर- वह तिनकों से अपने रहने के लिए घोंसला बनाती होगी ।

4. इस पद्यांश के कवि या कवयित्री का नाम लिखिए।

उत्तर- जया जादवानी

काव्यांश 2

अभी कहा जाता है
उस कथा का आखिरी हिस्सा
जो बूढ़ी नानी सुना रही सदियों से
दुनिया के तमाम बच्चों को
अभी आती है एकबस
अन्तरिक्ष के पार की दुनिया से
लाएगी बचे हुए लोगों की खबर !
नही यह सबसे कठिन समय नहीं ।

1. कहानी कौन सुना रहा है ?

उत्तर- कहानी बूढ़ी नानी सुना रही है ।

2. कहानी का कौन सा हिस्सा बाकी है ?

उत्तर- कहानी का यह हिस्सा बाकि है कि आज भी ईमानदारी और सच्चाई बची है और हमेशा रहेगी।

3. अन्तरिक्ष से आने वाली बस किसका समाचार लाती है ?

उत्तर- अन्तरिक्ष से आने वाली बस ये समाचार लाती है कि कोई समय ख़राब नहीं होता तुम कभी भी अपना कम शुरू कर सकते हो।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. यह कठिन समय नही है यह बताने के लिए कविता में कौन- कौन से तर्क प्रस्तुत किए गए है ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- यह कठिन समय नही है , यह बताने के लिए कविता में कवयित्री ने अनेक तर्क दिए है। वह कहती है कि अभी भी चिड़िया की चोंच में तिनका दबा हु आ है। उसे अभी सहारा प्राप्त है। पेड़ से झड़ने वाली पत्तियों को थामने के लिए किसी व्यक्ति विशेष का हाथ आगे आने तैयार है। आज के समय में भी व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को बताता है कि अभी का समय कोई कठिन समय नही है ।

प्रश्न 2. यह सबसे कठिन समय नहीं कविता का मूल उद्देश्य क्या है ?

उत्तर- कविता का मूल उद्देश्य है ..... जीवन में किसी भी समय को कठिन न समझे । जीवन का कोई भी क्षण कठिन नही होता व्यक्ति अगर प्रयत्न करेए तो उसे प्रत्येक दुविधा से निकलने का अवसर मिल जाता है उसे विश्वास रखना चाहिए कि अँधेरे के बाद उजाला अवश्य होता है। इसी तरह कठिन समय के बाद अच्छा समय भी जल्दी आ जाता है। कठिनता मानव ह्रदय की सबसे बड़ी कमजोरी है।

प्रश्न 3 सूरज डूबने का वक्त हो गया पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- उक्त पंक्ति हमारे वापस आने का संदेश देती है। यह हमें बताती है कि घर के बाहर रहने का समय समाप्त हुआ, अब हमें घर वापस लौट जाना चाहिए। यह समय घूमने- फिरने का नहीं अपितु घर परिवार में आराम से बैठने का है। अत: समय रहते घर वापस आ जाओ।

अतिरिक्त प्रश्न

1 -पद्यांश में किस प्राचीन परंपरा की ओर संकेत किया गया है ?

उत्तर- संयुक्त परिवार में दादा- दादी द्वारा बच्चों को शाम के समय कहानी सुनाने की ओर संकेत किया गया है ।

2. चिड़िया चोंच में तिनका दबाए कहाँ उड़ने को तैयार है ?

उत्तर- सुरक्षित स्थान पर

3. बस कहाँ से और किनकी खबर लाएगी ?

उत्तर- अंतरिक्ष की दुनिया से बचे हुए लोगों की कुशलता का समाचार लाएगी ।

4 . यह कविता क्या संदेश देती है।

उत्तर- निराशा से बचने का संदेश देती है ।

1. "यह कठिन समय नहीं है?" यह बताने के लिए कविता में कौन- कौन से तर्क प्रस्तुत किए गए हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- "यह कठिन समय नहीं है?" - यह बताने के लिए कवि ने निम्नलिखित तर्क दिए हैं -

1. अभी भी चिड़िया चोंच में तिनका दबाए उड़ने को तैयार है क्योंकि वह नीड़ का निर्माण करना चाहती है।

2. एक हाथ झड़ती हुई पत्ती को सहारा देने के लिए बैठा है।

3. अभी भी एक रेलगाड़ी गंतव्य अर्थात् पहुँचने वाले स्थान तक जाती है।

4. नानी की कथा का आखिरी हिस्सा बाकी है।

5. अभी भी एक बस अंतरिक्ष के पार की दुनिया से बचे हुए लोगों की खबर लाएगी।

6. अभी भी कोई किसी को कहता है कि जल्दी आ जाओ, सूरज डूबने का समय हो चला है।

2. चिड़िया चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी में क्यों है ? वह तिनकों का क्या करती होगी? लिखिए।

उत्तर:- चिड़िया अपनी चोंच में तिनका दबाकर उड़ने की तैयारी में है क्योंकि सूरज डूबने का समय हो चुका है उसके डूबने से पहले चिड़िया अपने लिए घोंसला बनाना चाहती है। वह तिनके से अपने लिए घोंसला तैयार कर उसमें अपने बच्चों के साथ रहेगी। घोंसला उसके परिवार को सुरक्षा प्रदान करता है।

3. कविता में कई बार 'अभी भी' का प्रयोग करके बातें रखी गई है। अभी भी का प्रयोग करते हुए तीन वाक्य बनाइए और देखिए उसमे लगातार , निरंतर,बिना रुके चलनेवाले किसी कार्य का भाव निकल रहा है या नहीं?

उत्तर:- 1. मुझे अभी भी सिरदर्द है।

2. अभी भी गाँव में बच्चे कई मील पैदल चलकर स्कूल जाते हैं।

3. हम अभी भी अंग्रेजी सीख रहे हैं।

तीनों वाक्यों में निरंतरता का भाव निकल रहा है।

4. "नहीं" और "अभी भी" को एक साथ प्रयोग करके तीन वाक्य लिखिए और देखिए 'नहीं' 'अभी भी' के पीछे कौन-कौन से भाव छिपे हो सकते हैं?

उत्तर:-

(i) नहीं, अभी भी मेरी परीक्षा की तैयारी कम है।

(ii) नहीं, अभी भी इमारत का निर्माण नहीं हुआ है।

(iii) नहीं, अभी भी मेहमान के आने में देर हैं।

अभी भी, निरंतर चलने वाली प्रक्रिया का बोध कराता है तथा नहीं से कार्य के न होने का पता चलता है।

5. आप जब भी घर से स्कूल जाते हैं कोई आपकी प्रतीक्षा कर रहा होता है। सूरज डूबने का समय भी आपको खेल के मैदान से घर लौट चलने की सूचना देता है कि घर में कोई आपकी प्रतीक्षा कर रहा है - प्रतीक्षा करनेवाले व्यक्ति के विषय में आप क्या सोचते हैं? अपने विचार लिखिए।

उत्तर:- प्रतीक्षा करनेवाले व्यक्ति हमारे प्रियजन ही हो सकते हैं। मेरे तो दिन की शुरुआत और अंत माँ के प्यार से ही होता है। सुबह में प्यार से माथा चूमकर जगाने में माँ का प्यार, नाश्ते में बनी पसंद की चीज़ों में माँ का प्यार , भले-बुरे की डाँट में माँ का प्यार, सूरज डूबने के साथ खेल के मैदान से घर लौट चलने की सूचना देता माँ का प्यार तथा जीने का सलीका सिखाता माँ का प्यार।

पाठ 9

कबीर की साखियाँ

इन साखियों में जीवन मूल्यों को उजागर किया गया है । इनमें बताया गया है कि एक गाली देने से यह अनेक गालियों में बदल जाती है क्योंकि एक का विलोम अनेक होता है और माला के फेरने की बजाय हमें मन के दुर्गुणों को दूर करना चाहिए।

काव्य पंक्तियाँ पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

जाति ने पूछो साध की। पूछ लीजिए ज्ञान ।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान ।।
आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक ।
कह कबीर नहीं उलटिए, वही एक की एक।।

1 कवि ने साधु की जाति न पूछने के लिए क्यों कहा है?

उत्तर- क्योंकि साधु किसी भी जाति कुछ भी हो हमें केवल उसके ज्ञान को प्रा प्त करने की चेष्टा करनी चाहिए।

3- हमें म्यान का मोल क्यों नहीं करना चाहिए?

उत्तर- क्योंकि जब तलवार खरीदी जाती है तो उसकी धार देखी जाती है जोकि उसका गुण है इस लिए हमें म्यान का मोल नहीं करना चाहिए जिसकी कोई महत्ता नहीं होती।

4-हमें गाली का जवाब गाली से क्यों नहीं देना चाहिए?

उत्तर- इसलिए नहीं देना चाहिए क्योंकि बुराई को फ़ैलाने से बचना चाहिए अगर गाली का जवाब गाली से दिया जाएगा तो वह कभी समाप्त नहीं होगी ।

2

माला तो कर में फिरै,जीभि फिरै मुख मांहि।
मनुवां तो दहुँ दिसि फिरै,यह तौ सुमिरन नाहिं ।।
कबीर घास न नींदिए,जो पाऊं तलि होई ।
उड़ि पडै जब आँखि मेंए खरी दुहेली होई ।।

1-मनुष्य दिखावे की भक्ति किस रूप में करता है ?

उत्तर- मनुष्य दिखावे के लिए मुख से तो ईश्वर का नाम जपता है परन्तु उसका मन स्थिर न रहकर सांसारिक मोह माया में भटकता रहता है।

2- कवि सच्चा सुमिरन किसे नहीं मानता है ?

उत्तर- कवि के अनुसार जो केवल दिखावे के लिए भगवा न का नाम लेता है उसे सच्चा सुमिरन नहीं माना जा सकता।

3 मनुवां तो दहुँ दिसि फिरै, से क्या आशय है ।

उत्तर- इस पंक्ति का आशय है कि मनुष्य का मन ईश्वर की भक्ति करते हुए भी सांसारिकता में लिप्त रहता है ।

4 . कवि घास के तिनके की भी निंदा करने से क्यों मना करता है ?

उत्तर- क्योंकि तिनका बहुत छोटा होने के बाद भी आँख में पड़ने के बाद पीड़ा का कारण बन जाता है इसलिए हमें छोटी चीजों के महत्व को समझते हुए उनकी निंदा नहीं करनी चाहिए ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 तलवार का महत्व होता है म्यान का नहीं उक्त उदा हरण से कबीर क्या कहना चाहते है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कबीर के अनुसार हमें वस्तु को महत्व देना चाहिए न कि वस्तु के डिब्बे को। कबीर इसी प्रकार गुणों को महत्व देने की बात करते है। उनके अनुसार व्यक्ति का अपना कोई अस्तित्व नहीं है जब तक कि उसमें गुणों का संचार न हो।

प्रश्न 2. कबीर घास की निंदा करने से क्यों मना करते है ?

उत्तर- कबीर कहते है कि हमें कमज़ोर लोगों की निंदा नहीं करनी चाहिए क्योंकि जागृत होने के बाद ये लोग ही कष्ट देने का कारण बन सकते हैं।

प्रश्न 3. कबीर संत थे या कवि ? स्पष्ट कीजिए

उतर कबीरदा स एक संत थे। उन्होंने संतों की परम्परा का निर्वाह करते हुए लोगों को सद्विचार प्रदान किए। नि :संदेह वे कवि भी थे। लेकिन उनकी संत प्रवृतियों के समक्ष उनकी कवि वृति छिप जाती है ।

प्रश्न 4 कबीर की भाषा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- कबीर की भाषा साधारण बोलचाल की भा षा है। उन्हें वा णी का डिक्टेटर भी कहा जाता है। कबीर की भाषा में अरबी , फारसी खड़ी बोली , पंजाबी आदि भाषाओँ के शब्द देखने को मिलते हैं। इसलिए कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी या खिचड़ी भाषा भी कहते है।

अतिरिक्त प्रश्न

प्रश्न. हमें विद्वान लोगों के ज्ञान और जाति में से किसका सम्मान करना चाहिए ?

उत्तर- हमें विद्वान लोगों के ज्ञान का सम्मान करना चाहिए न कि जाति का।

प्रश्न. कबीर जी ने गाली देने के बारे में क्या बताया है ?

उत्तर- कबीर जी ने गाली देने वाले को समझाया है कि हमें कभी भी गाली का जवाब गाली सेनहीं देना चाहिए क्योंकि इसका कोई अंत नहीं होता ।

प्रश्न. कबीर ने किसको फेरने पर जोर दिया है ?

उत्तर- मन को फेरने पर जोर दिया है ।

प्रश्न. घास के तिनके की निंदा के माध्यम से किसकी ओर संकेत किया गया है ?

उत्तर- कमज़ोर और असहाय व्यक्ति की ओर

प्रश्न. किस तरह के व्यक्ति पर लोग दया करते हैं ?

उत्तर- सज्जन और अहंकार से रहित व्यक्ति पर सभी दया करते हैं ।

1. 'तलवार का महत्त्व होता है, म्यान का नहीं' - उक्त उदाहरण से कबीर क्या कहना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- 'तलवार का महत्व होता है , म्यान का नहीं' से कबीर यह कहना चाह ते हैं कि असली चीज़ की कद्र की जानी चाहिए। दिखावटी वस्तु का कोई महत्व नहीं होता। इसी प्रकार किसी व्यक्ति की पहचान अथवा उसका मोल उसकी काबलियत के अनुसार तय होता है न कि कुल , जाति, धर्म आदि से। उसी प्रकार ईश्वर का भी वास्तविक ज्ञान जरुरी है। ढोंग- आडंबर तो म्या न के समान निरर्थक है। असली बह्रम को पहचानो और उसी को स्वीकारो।

2. पाठ की तीसरी साखी- जिसकी एक पंक्ति हैं 'मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै , यह तो सुमिरन नाहिं ' के द्वारा कबीर क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर:- कबीरदास जी इस पंक्ति के द्वारा यह कहना चाहते हैं कि भगवान का स्मरण एकाग्रचित होकर करना चाहिए। इस साखी के द्वारा कबीर केवल माला फेरकर ईश्वर की उपासना करने को ढोंग बताते हैं।

3. कबीर घास की निंदा करने से क्यों मना करते हैं। पढ़े हुए दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- घास का अर्थ है पैरों में रहने वाली तुच्छ वस्तु। कबीर अपने दोहे में उस घास तक की निंदा करने से मना करते हैं जो हमारे पैरों के तले होती है। कबीर के दोहे में 'घास' का विशेष अर्थ है। यहाँ घास दबे-कुचले व्यक्तियों की प्रतीक है। कबीर के दोहे का संदेश यही है कि व्यक्ति या प्राणी चाहे वह जितना भी छोटा हो उसे तु च्छ समझकर उसकी निंदा नहीं करनी चाहिए। हमें सबका सम्मान करना चाहिए।

4. मनुष्य के व्यवहार में ही दूसरों को विरोधी बना लेनेवाले दोष होते हैं। यह भावार्थ किस दोहे से व्यक्त होता है?

उत्तर:- "जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।।

5. "या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।"
"ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।"

इन दोनों पंक्तियों में 'आपा' को छोड़ देने या खो देने की बात की गई है। 'आपा' किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है? क्या 'आपा' स्वार्थ के निकट का अर्थ देता है या घमंड का?

उत्तर:- "या आपा को . . . . . आपा खोय।" इन दो पंक्तियों में 'आपा' को छोड़ देने की बात की गई है। यहाँ 'आपा' अंहकार के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। 'आपा' घमंड का अर्थ देता है।

6. आपके विचार में आपा और आत्मविश्वास में तथा आपा और उत्साह में क्या कोई अंतर हो सकता है? स्पष्ट करें।

उत्तर:- आपा और आत्मविश्वास में तथा आपा और उत्साह में अंतर हो सकता है -

1. आपा और आत्मविश्वास - आपा का अर्थ है अहंकार जबकि आत्मविश्वास का अर्थ है अपने ऊपर विश्वास।

2. आपा और उत्साह - आपा का अर्थ है अहंकार जबकि उत्साह का अर्थ है किसी काम को करने का जोश।

7. सभी मनुष्य एक ही प्रकार से देखते- सुनते हैं पर एकसमान विचार नहीं रखते। सभी अपनी- अपनी मनोवृत्तियों के अनुसार कार्य करते हैं। पाठ में आई कबीर की किस साखी से उपर्युक्त पंक्तियों के भाव मिलते हैं, एकसमान होने के लिए आवश्यक क्या है? लिखिए।

उत्तर:- "आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक।।"

मनुष्य के एक समान होने के लिए सबकी सोच का एक समान होना आवश्यक है।

8. कबीर के दोहों को साखी क्यों कहा जाता है?

उत्तर:- कबीर के दोहों को साखी इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनमें श्रोता को गवाह बनाकर साक्षा त् ज्ञान दिया गया है। कबीर समाज में फैली कुरीतियों , जातीय भावनाओं, और बाह्य आडंबरों को इस ज्ञान द्वारा समाप्त करना चाहते थे।

• भाषा की बात

9. बोलचाल की क्षेत्रीय विशेषताओं के कारण शब्दों के उच्चारण में परिवर्तन होता है जैसे वाणी शब्द बानी बन जाता है। मन से मनवा, मनुवा आदि हो जाता है। उच्चारण के परिवर्तन से वर्तनी भी बदल जाती है। नीचे कुछ शब्द दिए जा रहे हैं उनका वह रूप लिखिए जिससे आपका परिचय हो।

ग्यान, जीभि, पाऊँ, तलि, आंखि, बरी।

उत्तर:- ग्यान - ज्ञान

जीभि - जीभ

पाऊँ - पाँव

तलि - तले

आँखि - आँख

बरी - बड़ी

पाठ 10

कामचोर

इस्मत चुगताई

इस पाठ में हास्य व्यंग्य से भरपूर अमीर घर के उन बच्चों की शरारतों का वर्णन हैं , जिन्हें बचपन में काम करने की आदत नहीं डाली गई है। इससे वे आलसी ओर निकम्मे हो गए हैं। उनकी आदतों को देखकर उनके माता-पिता जब उन्हें काम करने के लि ए प्रलोभन देते हैं, तब वे इस तरह से कामों को करते हैं कि उन्हें दुबारा काम न करने की चेतावनी देनी पड़ती है इससे वे फिर आलसी ओर निकम्मे हो जाते हैं।

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

गद्यांश 1

बड़ी देर के वाद-विवाद के बाद यह तय हुआ कि सचमुच नौकरों को निकाल दिया जाए। आखिर, ये मोटे-मोटे किस काम के हैं ! हिलकर पानी नहीं पीते। इन्हें अपना काम खुद करने की आदत होनी चाहिए। कामचोर कहीं के ! "तुम लोग कुछ नहीं। इतने सारे हो और सारा दिन ऊधम मचाने के सिवा कुछ नहीं करते।"और सचमुच हमें खयाल आया कि हम आखिर काम क्यों नहीं करते ? हिलकर पानी पीने में अपना क्या खर्च हाता है ? इसलिए हमने तुरतं हिल-हिलकर पानी पीना शुरू किया।

प्रश्न 1. लेखक व पाठ का नाम लीखिए ?

उत्तर- इस्मत चुगताई, कामचोर

प्रश्न 2. वाद विवाद किनके मध्य हो रहा था ?

उत्तर- वाद विवाद अम्मा और अब्बा के मध्य हो रहा था ।

प्रश्न 3. अम्मा और अब्बा न्र क्या निर्णय लिया ?

उत्तर- अम्मा और अब्बा ने घर के सभी नौकरों को निकलने का निर्णय लिया ।

प्रश्न 4. मोटे -मोटे शब्द का प्रयोग किनके लिए और क्यों किया गया है ?

उत्तर- मोटे-मोटे शब्द का प्रयोग बच्चों के लिए किया गया क्योंकि उनकी नजर में वे पूर्णतया कामचोर हैं, केवल खाते पीते व आराम करते हैं। घर का कोई काम नहीं करते।

गद्यांश 2

घर में तूफान उठ खड़ा हुआ। ऐसा लगता था जैसे सारे घर में मुर्गियाँ , भेडें, टूटे हुए तसले , बालटियाँ, लोटे, कटोरे और बच्चे थे। ब च्चे बाहर किए गए। मुर्गियाँ बाग में हँकाई गईं। मातम- सा मनाती तरकारी वाली के आँसू पोंछे गए और अम्मा आगरा जाने के लिए सामान बाँधने लगीं। "या तो बच्चा-राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। नहीं तो मैं चली मायके अम्मा ने चुनौती दे दी।

प्रश्न 1. अब्बा ने सबको क़तर में खड़ा कर क्या हिदायत दी ?

उत्तर- अब्बा ने बच्चोंको हिदायत दी कि कोई किसी भी काम को हाथ नहीं लगाएगा यदि लगाएगा तो उसे रात का खाना नहीं दिया जाएगा ।

प्रश्न 2. कोर्ट मार्शल से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- कोर्ट मार्शल का अर्थ हैशाही फरमान जिसका उल्लंघन नही किया जा सकता ।

प्रश्न 3. बच्चों ने क्या निश्चय किया ?

उत्तर- बच्चों ने निश्चय कर लिया कि अब किसी भी काम को हाथ नहीं लगाएँगे मेहनत कर पानी भी नहीं पिएँगे।

प्रश्न 4. बच्चों को रात का खाना क्यों नहीं दिया गया ?

उत्तर- क्योंकि बच्चों ने घर का काम ऐसे अस्त व्यस्त तरीके से किया कि घर की दशा ही बिगड़ गई।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न1 बच्चों के ऊधम मचाने के कारण घर की क्या दुर्दशा हुई ?

उत्तर- बच्चों के ऊधम मचाने के कारण घर की दशा बिगड़ गई। घर का सारा सामान अस्त.व्यस्त हो गया। सबसे पहले दरी की हालत बुरी हो गई। उसके ऊपर पानी डालकर उसे कीचड़ युक्त कर दिया। बर्तनों से तोड़. फोड़ की गई। इन सब उपद्रवों के कारण घर की दशा दुर्दशा में बदल गई ।

प्रश्न 2 तो बच्चा राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। अम्मा ने कब कहा और इसका क्या परिणाम क्या हुआ?

उत्तर- अम्मा ने ये शब्द तब कहे जब बच्चों ने घर में भयंकर उपद्रव मचा दिया। सारा सामान कूड़े.कर्कट के समान लग रहा था। घर की दशा दुर्दशा में बदल चुकी थी। इस कथन का यह परिणाम निकला कि पिताजी ने सभी बच्चों को एक पंक्ति में खड़ा करके पूरी बटालियन का कोर्ट मार्शल कर दिया। उन्हें चेतावनी दे डाली कि अगर किसी बच्चे ने किसी भी वस्तु को हाथ लगायाए तो उसका रात का खाना बंद हो जाएगा।

प्रश्न 3 कामचोर कहानी क्या संदेश देती है ?

उत्तर- कामचोर कहानी बच्चों को जिम्मेदार और कार्यकुशल बनाने का संदेश देती है । इसके अनुसार प्रत्येक माता-पिता को चाहिए कि वे अ पने बच्चों को अपना काम स्वयं करने तथा समय आने पर पारिवारिक जिम्मेदारियाँ उठाने के लिए तैयार करें ।

प्रश्न 4 सोचे- समझे बिना कार्य कर डालने से क्या.क्या हानियाँ हो सकती है ?

उत्तर- जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे कार्य करता है। उसे बाद में पछताना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति काम तो बिगाडता ही है साथ ही वह सबकी हँसी का पात्र भी बनता है। काम के बिगड़ जाने पर उसके मन को शाँति नही मिलती ।

अतिरिक्त प्रश्न

1. घर से नौकरों को निकालने का निर्णय क्यों लिया गया ?

उत्तर- घर से नौकरों को निकालने का निर्णय इसलिए लिया गया क्योंकि ब च्चे अपना काम स्वयंकर सकें और उनमे काम करने की आदत का विकास हो सके ।

2. काम करने के लिए उन्हें क्या प्रलोभन दिया गया ?

उत्तर- तनख्वाह देने का

3. झाड़ू के पुर्जे पुर्जे क्यों उड़ गए ?

उत्तर- तनख्वाह के प्रलोभन देने से बच्चों के द्वारा खींचातानी से ।

4. धींगा-मुश्ती में बच्चों ने क्या हालत बना ली ?

उत्तर- कीचड़ में सन गए ।

5. भेड़ें कहाँ टूट पड़ी और क्यों ?

उत्तर- तरकारी की सब्जियों भरी टोकरी परए दाने को छोड़कर तरकारी खाना चाहती थी ।

1. कहानी में मोटे-मोटे किस काम के हैं? किन के बारे में और क्यों कहा गया?

उत्तर:- कहानी में 'मोटे-मोटे किस काम के हैं ' बच्चों के बारे में कहा गया है क्योंकि वे घर के काम-काज में जरा सी भी मदद नहीं करते थे तथा दिन भर उधम मचाते रहते थे। इस तरह से ये कामचोर हो गए थे।

2. बच्चों के ऊधम मचाने के कारण घर की क्या दुर्दशा हुई?

उत्तर:- बच्चों के उधम मचाने से घर अस्त-व्यस्त हो गया। मटके-सुराहियाँ इधर-उधर लुढक गए। घर के सारे बर्तन अस्त-व्यस्त हो गए। पशु-पक्षी इधर-उधर भागने लगे। घर में धूल , मिट्टी और कीचड़ का ढ़ेर लग गया। मटर की सब्जी बनने से पहले भेड़ें खा गईं। मुर्गे- मुर्गियों के कारण कपड़े गंदे हो गए। इस वजह से पारिवारिक शांति भी भंग हो गई। अम्मा ने तो घर छोड़ने का भी फैसला ले लिया।

3. "या तो बच्चाराज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। " अम्मा ने कब कहा ? और इसका परिणाम क्या हुआ?

उत्तर:- अम्मा ने बच्चों द्वारा किए गए घर के हालत को देखकर ऐसा कहा था । जब पिताजी ने बच्चों को घर के काम काज में हाथ बँटाने को कहा तब उन्होंने इसके विपरीत सारे घर को तहस- नहस कर दिया। जिससे अम्मा जी बहुत परेशान हो गई थीं। इसका परिणाम ये हुआ कि पिताजी ने घर की किसी भी चीज़ को बच्चों को हाथ ना लगाने कि हिदायत दे डाली। अगर किसी ने घर का काम किया तो उसे रात का खाना नहीं दिया जाएगा।

4. 'कामचोर' कहानी क्या संदेश देती है?

उत्तर:- यह एक हास्यप्रधान कहानी है। यह कहानी संदेश देती है की बच्चों को घर के कामों से अनभिज्ञ नहीं होना चाहिए। उन्हें उनके स्वभाव के अनुसार , उम्र और रूचि ध्यान में रखते हुए काम कराना चाहिए। जिससे बचपन से ही उनमें काम के प्रति लगन तथा रूचि उत्पन्न हो न कि ऊब।

5. क्या बच्चों ने उचित निर्णय लिया कि अब चाहे कुछ भी हो जाए, हिलकर पानी भी नहीं पिएँगे।

उत्तर:- बच्चों द्वारा लिया गया निर्णय उचित नहीं था क्योंकि स्वयं हिलकर पा नी न पीने का निश्चय उन्हें और भी कामचोर बना देगा। वे कभी-भी कोई काम करना सीख ही नहीं पाएँगें। बच्चों को काम तो करना चाहिए पर समझदारी के साथ। बड़ों को उनको काम सिखाना चाहिए और आवश्यकता अनुसार मार्गदर्शन देना चाहिए।

6. घर के सामान्य काम हों या अपना निजी काम , प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुरूप उन्हें करना आवश्यक क्यों है?

उत्तर:- अपनी क्षमता के अनुसार काम करना इसलिए जरूरी है क्योंकि क्षमता के अनुरूप किया गया कार्य सही और सुचारु रूप से होता है। यदि हम अपने घर का काम या अपना निजी काम , नहीं करेंगे तो हम कामचोर बन जाएँगे। हमें अपने कामों के लिए आत्मनिर्भर रहना चाहिए।

7. भरा-पूरा परिवार कैसे सुखद बन सकता है और कैसे दुखद ? कामचोर कहानी के आधार पर निर्णय कीजिए।

उत्तर:- भरा-पूरा परिवार तब सुखद बन सकता है जब सब मिल-जुलकर कार्य करें व दुखद तब बनता है जब सब स्वार्थ भावना से कार्य करें। कामों के क्षमतानुसार विभाजित करने से कहानी जैसी दुखद स्थिति से बचा जा सकता है। कार्यों को बाँटने से किसी दूसरे को काम करने के लिए कहने की जरुरत होगी और तनाव भी उत्पन्न नहीं होगा।

8. बड़े होते बच्चे किस प्रकार माता- पिता के सहयोगी हो सकते हैं और किस प्रकार भार ? कामचोर कहानी के आधार पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर:- बडे होते बच्चे यदि माता-पिता को छोटे-मोटे कार्यों में मदद करें तो वे उनके सहयोगी हो सकते हैं जैसे अपना कार्य स्वयं, अपने-आप स्कूल के लिए तैयार हो जाएँ, अपने खाने के बर्तन यथा सम्भव स्थान पर रख आएँ, अपने कमरे को सहज कर रखें।

यदि हम बच्चों को उनका कार्य करने की सीख नहीं देते तो वह सहयोग के स्थान पर माता- पिता के लिए भार ही साबित होंगे। उनके बड़ा होने पर उनसे कोई कार्य कराया जाएगा तो वह उस कार्य को भली-भांति करने के स्थान पर तहस-नहस ही कर देंगे, जैसे की कामचोर लेख पर बच्चों ने सारे घर का हाल कर दिया था। इसलिए माता- पिता को बच्चों को उनके स्वभाव के अनुसार , उम्र और रूचि ध्यान में रखते हुए काम कराना चाहिए। जिससे बचपन से ही उनमें काम के प्रति लगन तथा रूचि उत्पन्न हो न कि ऊब। और उनके सहयोगी हो सके।

9. 'कामचोर' कहानी एकल परिवार की कहानी है या संयुक्त परिवार की? इन दोनों तरह के परिवारों में क्या-क्या अंतर होते हैं?

उत्तर:- कामचोर कहानी सयुंक्त परिवार की कहानी है इन दोनों में अन्तर इस प्रकार है -

एकल परिवार में सदस्यों की संख्या तीन से चार होती है - माँ, पिता व बच्चे होते है। सयुंक्त परिवार में सदस्यों की संख्या ज़्यादा होती है क्योंकि इसमें चाचा- चाची ताऊजी-ताईजी,माँ-पिताजी, बच्चे सभी सम्मिलित होते हैं। एकल परिवार में सारा कार्य स्वयं करना पड़ता है जबकि संयुक्त परिवार में सबलोग मिल-जुलकर कार्य क रते हैं। एकल परिवार में जीवन के सुख- दुख का अकेले सामना करना पड़ता है जबकि सयुंक्त परिवार में सारे सदस्य मिलकर जीवन के सुख-दुख का सामना करते है।

• भाषा की बात

10. "धुली-बेधुली बालटी लेकर आठ हाथ चार थनों पर पिल पड़े। " धुली शब्द से पहले 'बे' लगाकर बेधुली बना है। जिसका अर्थ है 'बिना धुली' 'बे' एक उपसर्ग है।

'बे' उपसर्ग से बननेवाले कुछ और शब्द हैं -

बेतुका, बेईमान, बेघर, बेचैन, बेहोश आदि। आप भी नीचे लिखे उपसर्गों से बननेवाले शब्द खोजिए -

1. प्र .....
2. आ .....
3. भर .....

4. बद .....

उत्तर:- 1. प्र - प्रबल, प्रभाव, प्रयोग, प्रचलन, प्रवचन

2. आ - आमरण, आभार, आजन्म, आगत

3. भर - भरपेट, भरपूर, भरमार, भरसक

4. बद - बदसूरत, बदमिज़ाज, बदनाम, बदतर

पाठ 11

जब सिनेमा ने बोलना सीखा - प्रदीप तिवारी

इस पाठ में लेखक ने भारतीय सिनेमा जगत में आए महत्त्व पूर्ण बदलाव को रेखांकित किया है। 14 मार्च,1931 की ऐतिहासिक तारीख को पहली बोलने वाली फिल्म 'आलम आरा' का प्रदर्शन हुआ। उससे पहले मूक फ़िल्में बनती थी जो काफी लोकप्रिय हुआ करती थी ।इस तिथि के बाद भारतीय सिनेमा ने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

गद्यांश 1

'वे सभी सजीव हैं , साँस ले रहे हैं , शत-प्रतिशत बोल रहे हैं , अठहत्तर मुर्दा इंसान जिंदा हो गए , उनको बोलते, बातें करते देखो।' देश की पहली सवाक बोलती फिल्म 'आलम आरा' के पोस्टरों पर विज्ञापन की ये पंक्तियाँ लिखी हुई थीं। 14 मार्च 1931 की वह ऐतिहासिक तारीख भा रतीय सिनेमा में बड़े बदलाव का दिन था। इसी दिन पहली बार भारत के सिनेमा ने बोलना सीखा था। हालाँकि वह दौर ऐसा था जब मूक सिनेमा लोकप्रियता के शिखर पर था। 'पहली बोलती फिल्म जिस साल प्रदर्शित हुई , उसी साल कई मूक फिल्में भी विभिन्न भाषाओं में बनीं। मगर बोलती फिल्मों का नया दौर शुरू हो गया था।

प्रश्न 1. आलम आरा फिल्म के पोस्टरों पर क्या लिखा था ?

उत्तर- 'आलम आरा" फिल्म के पोस्टरों पर लिखा था वे सभी सजीव हैं , सांस ले रहे हैं, शत प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहत्तर मुर्दा इंसान जिन्दा हो गए, उनको बोलते बातें करते देखो ।

प्रश्न 2. 14 मार्च 1931 को ऐतिहासिक तारीख क्यों माना जाता है ?

उत्तर- क्योंकि इस दिन पहली बार भारतीय सिनेमा ने बोलना सीखा था। पहली बोलने वाली फिल्म आलम आरा प्रदर्शित की गयी थी ।

प्रश्न 3. सवाक फ़िल्में किसे कहते हैं ?

उत्तर- जिन फिल्मों में संवाद बोले जाते हैं उन्हें सवाक फिल्में कहा जाता है।

प्रश्न 4. सवाक फिल्मों से पहले किन फिल्मों का प्रचालन था ?

उत्तर- सवाक फिल्मों से पहले मूक फिल्मों का प्रचलन था ।

गद्यांश 2

फिल्म की नायिका जुबैदा थीं। नायक थे विट्ठल। वे उस दौर के सर्वाधिक पारिश्रमिक पा नेवाले स्टार थे। उनके चयन को लेकर भी एक किस्सा काफी चर्चित है। विट्ठल को उर्दू बोलने में मुश्किलें आती थीं। पहले उनका बतौर नायक चयन किया गया मगर इसी कमी के कारण उन्हें हटाकर उनकी जगह मेहबूब को नायक बना दिया गया। विट्ठल नाराज हो गए और अपना हक पाने के लिए उन्हों ने मुकदमा कर दिया।

प्रश्न 1 फिल्म की नायिका कौन थी ?

उत्तर- जुबैदा ।

प्रश्न 2 फिल्म के नायक कौन थे ?

उत्तर- विठ्ठल ।

प्रश्न 3 महबूब को नायक क्यों बनाया गया ?

उत्तर- विठ्ठल को उर्दू बोलनी नहीं आती थी इस लिए महबूब को नायक बनाया गया ।

प्रश्न 4 विठ्ठल ने अपना हक़ पाने के लिए क्या किया ?

उत्तर- विठ्ठल ने अपना हक़ पाने के लिए मुकदमा कर दिया ।

गद्यांश 3

अभिनेताओं-अभिनेत्रियों की लोकप्रियता का असर उस दौर के दर्शकों पर भी खूब पड़ रहा था। 'माधुरी' नाम की फिल्म में नायिका सुलोचना की हेयर स्टाइल उस दौर में औरतों में लोकप्रिय थी। औरतें अपनी केश सज्जा उसी तरह कर रही थीं। अर्देशिर ईरानी की फिल्मों में भारतीय के अलावा ईरानी कलाकारों ने भी अभिनय किया था। स्वयं 'आलम आरा' भारत के अलावा श्रीलंका , बर्मा और पश्चिम,एशिया में पसंद की गई। भारतीय सिनेमा के ज नक फाल्के को 'सवाक' सिनेमा के जनक अर्देशिर ईरानी की उपलब्धि को अपनाना ही था, क्योंकि वहाँ से सिनेमा का एक नया युग शुरू हो गया था।

प्रश्न 1 माधुरी नाम की फिल्म में नायिका कौन थी ?

उत्तर- माधुरी नाम की फिल्म में नायिका सुलोचना थी ।

प्रश्न 2 औरतें अपनी केश सज्जा किस तरह कर रही थी ?

उत्तर- औरतें अपनी केश सज्जा सुलोचना की तरह कर रही थी ।

प्रश्न 3 सवाक फिल्मों का जनक किसे कहा जाता है ?

उत्तर- सवाक फिल्मों का जनक फाल्के को कहा जाता है ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न1. पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फि ल्मकार अर्देशिर,म.ईरानी को प्रेरणा कहाँ से मिली ? उन्होंने आलम आरा फिल्म के लिए आधार कहाँ से मिला ?

उतर- पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फिल्मकार अर्देशिर ,म. ईरानी को सन 1929 में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म शो बोट से प्रेरणा मिली। इस फिल्म को देखने के बाद उनके मन में बोलती फिल्म बनाने की इच्छा जागृत हुई। अर्देशिर ने पारसी रंगमंच के लोकप्रिय नाटक को आधार बनाकर अपनी फिल्म आलम आरा की पटकथा का निर्माण किया

प्रश्न 2. विट्ठल का चयन आलम आरा के नायक के रूप में हुआ लेकिन उन्हें हटाया क्यों गया ? विट्ठल ने पुन: नायक होने के लिए क्या किया ?

उतर- विट्ठल को आलम आरा फिल्म में नायक की भूमिका से इसलिए हटाया गया था क्योंकि उन्हें उर्दू बोलने में कठिनाई आती थी। लेकिन विट्ठल ने इसे अपना अपमान समझा और न्यायालय में मुकदमा दायर कर दिया। उनका मुकदमा उस समय के जाने माने वकील मोहम्मद अली जिन्न ने लड़ा। इस मुकदमे में विट्ठल की जीत हुई और पुनः आलम आरा के लिए नायक बना दिए ।

प्रश्न 3. 14 मार्च 1931 की तिथि का भारतीय सिनेमा के इतिहास में क्या स्थान है ?

उतर 14 मार्च 1931 की तिथि भारतीय सिनेमा के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखी गई है। इस दिन प्रथम सवाक फिल्म आलम आरा का प्रदर्शन मुंबई के मेजेस्टिक सिनेमा हॉल में हुआ था ।

प्रश्न 4 फिल्मों में प्रकाश प्रणाली का जन्म कैसे हुआ ?

उत्तर- भारतीय इतिहास की प्रथम बोलती फिल्म आलम आरा की शूटिंग साउंड के कारण रात को करनी पड़ी थी। इसके लिए कृत्रिम प्रकाश की व्यवस्था करनी पड़ी थी। यहीं से प्रकाश प्रणाली का जन्म हुआ ।

अतिरिक्त प्रश्न

1.अर्देशिर की कंपनी ने भारतीय सिनेमा को लगभग कितने फ़िल्में बनाकर दी ?

उत्तर- लगभग 150 से अधिक मूक और 100 से अधिक सवाक फ़िल्में ।

2. आलमआरा फिल्म के नायक और नायिका नाम लिखिए ।

उत्तर- नायक विट्ठल, नायिका जुबैदा

3. विट्ठल की जगह पर महबूब को नायक केरूप में क्यों रखा गया ?

उत्तर- विट्ठल की जगह पर महबूब को नायक के रूप में इसलिए रखा गया क्योंकि उन्हें उर्दू बोलने में परेशानी आती थी ।

4. आलमआरा फिल्म को बनाने में कितना समय लगा ?

उत्तर- 4 माह का समय ।

5. फिल्म के 25 वर्ष पूरे होने पर अर्देशिर को क्या कहकर सम्मानित किया गया ?

उत्तर- भारतीय सवाक फिल्मों का पिता

1. जब पहली बोलती फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसके पोस्टरों पर कौन-से वाक्य छापे गए? उस फिल्म में कितने चेहरे थे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- देश की पहली बोलती फिल्म के विज्ञापन के लिए छापे गए वाक्य इस प्रकार थे -

"वे सभी सजीव हैं, साँस ले रहे हैं, शत-प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहत्तर मुर्दा इनसान जिंदा हो गए, उनको बोलते, बातें करते देखो।"

पाठ के आधार पर 'आलम आरा' में कुल मिलाकर 78 चेहरे थे अर्थात् काम कर रहे थे।

2. पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फिल्मकार अर्देशिर एम . ईरानी को प्रेरणा कहाँ से मिली ? उन्होंने आलम आरा फिल्म के लिए आधार कहाँ से लिया?विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर:- फिल्मकार अर्देशिर एम. ईरानी ने 1929 में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म 'शो बोट' देखी और तभी उनके मन में बोलती फिल्म बनाने की इच्छा जगी। इस फ़िल्म का आधार उन्होंने पारसी रंगमंच के एक लोकप्रिय नाटक से लिया।

3. विट्ठल का चयन आलम आरा फिल्म के नायक के रूप हुआ लेकिन उन्हें हटाया क्यों गया? विट्ठल ने पुन: नायक होने के लिए क्या किया? विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर:- विट्ठल को फ़िल्म से इसलिए हटाया गया कि उन्हें उर्दू बोलने में परेशानी होती थी। पुन: अपना हक पाने के लिए उन्होंने मुकदमा कर दिया। विट्ठल मुकदमा जीत गए और भारत की पहली बोलती फिल्म के नायक बनें।

4. पहली सवाक् फिल्म के निर्माता-निदेशक अर्देशिर को जब सम्मानित किया गया तब सम्मानकर्ताओ ने उनके लिए क्या कहा था ? अर्देशिर ने क्या कहा ?और इस प्रसंग में लेखक ने क्या टिप्पणी की है ? लिखिए।

उत्तर:- पहली सवाक् फिल्म के निर्माता- निर्देशक अर्देशिर को प्रदर्शन के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर सम्मानित किया गया और उन्हें "भारतीय सवाक् फिल्मों का पिता" कहा गया तो उन्होंने उस मौके पर कहा था, - "मुझे इतना बड़ा खिताब देने की जरूरत नहीं है। मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का जरूरी योगदान दिया है।" इस प्रसंग की चर्चा करते हुए लेखक ने अर्देशिर को विनम्र कहा है।

5. मूक सिनेमा में संवाद नहीं होते, उसमें दैहिक अभिनय की प्रधानता होती है। पर, जब सिनेमा बोलने लगा, उसमें अनेक परिवर्तन हुए। उन परिवर्तनों को अभिनेता , दर्शक और कुछ तकनीकी दृष्टि से पाठ का आधार लेकर खोजें, साथ ही अपनी कल्पना का भी सहयोग लें।

उत्तर:- मूक सिनेमा ने बोलना सीखा तो बहुत सारे परिवर्तन हुए। बोलती फिल्म बनने के कारण अभिनेताओं पढ़ा-लिखा होना ज़रूरी हो गया, क्योंकि अब उन्हें संवाद भी बोलने पड़ते थे। दर्शकों पर भी अभिनेताओं का प्रभाव पड़ने लगा। नायक- नायिका के लोकप्रिय होने से औरतें अभिने त्रियों की केश सज्जा तथा उनके कपड़ों की नकल करने लगीं। दृश्य और श्रव्य माध्यम के एक ही फ़िल्म में समिश्रित हो जाने से तकनीकी दृष्टि से भी बहुत सारे परिवर्तन हुए।

6. डब फिल्में किसे कहते हैं? कभी-कभी डब फ़िल्मों में अभिनेता के मुँह खोलने और आवाज़ में अंतर आ जाता है। इसका कारण क्या हो सकता है?

उत्तर:- फिल्मों में जब अभिनेताओं को दूसरे की आवाज़ दी जाती है तो उसे डब कहते हैं।

कभी-कभी फिल्मों में आवाज़ तथा अभिनेता के मुँह खोलने में अंतर आ जाता है क्योंकि डब करने वाले और अभिनय करने वाले की बोलने की गति समान नहीं होती या किसी तकनीकी दिक्कत के कारण हो जाता है।

भाषा की बात

7. सवाक् शब्द वाक् के पहले 'स' लगाने से बना है। स उपसर्ग से कई शब्द बनते हैं। निम्नलिखित शब्दों के साथ 'स' का उपसर्ग की भाँति प्रयोग करके शब्द बनाएँ और शब्दार्थ में होनेवाले परिवर्तन को बताएँ।

हित, परिवार, विनय, चित्र, बल, सम्मान।

उत्तर:- शब्द - उपसर्ग वाले शब्द

(i) हित - सहित
(ii) परिवार - सपरिवार
(iii) विनय - सविनय
(iv) चित्र - सचित्र
(v) बल - सबल
(vi) मान - सम्मान

8. उपसर्ग और प्रत्यय दोनों ही शब्दांश होते हैं। वाक्य में इनका अकेला प्रयोग नहीं होता। इन दोनों में अंतर केवल इतना होता है कि उपसर्ग किसी भी शब्द में पहले लगता है और प्रत्यय बाद में।

हिंदी के सामान्य उपसर्ग इस प्रकार हैं - अ/अन, नि, दु, क/कु, स/सु, अध, बिन, औ आदि।

पाठ में आए उपसर्ग और प्रत्यय युक्त शब्दों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं-

मूल शब्द	उपसर्ग	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द
वाक	स	सवाक	फिल्म	कार	फिल्मकार
लोचना	सु	सुलोचना	कामयाब	ई	कामयाबी

इस प्रकार के 15-15 उदाहरण खोजकर लिखिए और अपने सहपाठियों को दिखाइए।

मूल शब्द	उपसर्ग	नया शब्द
पुत्र	सु	सुपुत्र
घट	औ	औघट

सार	अनु	अनुसार
मुख	आ	आमुख
परिवार	स	सपरिवार
नायक	अधि	अधिनायक
मरण	आ	आमरण
संहार	उप	उपसंहार
ज्ञान	अ	अज्ञान
यश	सु	सुयश
कोण	सम	समकोण
कर्म	सत्	सत्कर्म
राग	अनु	अनुराग
बंध	नि	निबंध
पका	अध	अधपका

पाठ 12

सुदामा चरित- नरोत्तमदास

पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

इस पाठ में श्रीकृष्ण और सुदामा के माध्यम से सच्ची मित्रता का कठिन उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। इस मित्रता को एक आदर्श रूप में देखा जा सकता है। ऐसी मित्रता अनुपालन करने योग्य है । वर्तमान समय में यह मित्रता और भी महत्तवपूर्ण बन जाती है। जब व्यक्ति बुरे समय में अपने मित्र को पहचानने से इनकार कर देता है तब इस मित्रता के माध्यम से सबक लेकर कृष्ण और सुदामा की तरह एक दूसरे को समान बना लेने का सन्देश मिलता हैं।

पद्यांश 1

सीस पगा न झगा तन पे प्रभु, जानै को आहि बसै केहि ग्रामा।
धोती फटी-सी लटी दुपटी अरु, पाँयउ पानह की नहिं सामा॥
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक, रह्यौ चकि सों वसुधा अभिरामा।
पूछत दीन दयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा॥

प्रश्न 1 सुदामा कहाँ और क्यों गया था ?

उत्तर- सुदामा की आर्थिक दशा बहुत ख़राब थी वह दीनों की भाँति जीवन व्यतीत कर रहा था अपनी पत्नी के आग्रह करने पर वह अपने मित्र कृष्ण के पास सहायता माँगने के लिए गया था।

प्रश्न 2 द्वारपाल ने कृष्ण को सुदामा के बारे में क्या बताया ?

उत्तर- द्वारपाल ने बताया कि द्वार पर एक ब्राहमण खड़ा है उसके सर पर न पगड़ी है , न शरीर पर कुरता और न जाने किस गाँव का है उसके पैरों में जूते तक नहीं हैं वह इस धरती की सुंदरता देख कर चकित है । वह अपना नाम सुदामा बता रहा है और आपसे मिलना चाहता है ।

पद्यांश 2

आगे चना गुरुमातु दए तेए लए तुम चाबि हमें नहिं दीने ।
स्याम कह्यो मुसकाय सुदामा सोंए श्चोरी की बान में हौं जू प्रवीने ।
पोटरि काँख में चापि रहे तुमए खोलत नाहिं सुधा रस भीने ।
पाछिली बानि अजौ न तजो तुमए तैसई भाभी के तंदुल कीन्हें । ।

1 .सुदामा के माध्यम से किसने किसके लिए क्या उपहार भेजा ?

उत्तर. श्रीकृष्ण के लिए सुदामा की पत्नी ने चावल उपहार में भेजे ।

2. सुदामा उस उपहार को क्यों छिपा रहे थे ?

उत्तर- सुदामा उस उपहार को इसलिए छिपा रहे थे क्योंकि वे श्रीकृष्ण के लिए सूखे चावल तुच्छ उपहार समझ रहे थे ।

3 .गुरुमाता ने सुदामा को चने कब दिए थे ?

उत्तर- बचपन में ऋषि संदीपनी के आश्रम में साथ-साथ पढ़ने के समय ।

4. 'चोरी की बान में हौं जू प्रवीने' कृष्ण ने ऐसा क्यों कहा ?

उत्तर- 'चोरी की बान में हौं जू प्रवीने ' कृष्ण ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि गुरुमाता द्वारा दिए गए चने सुदामा जी ने चुपके-से अकेले ही खा लिए थे और चावल की पोटली को छिपाकर रखा हुआ था।

5.श्रीकृष्ण ने सुदामा द्वारा लाए गए उपहार को कैसा बताया ?

उत्तर- चावलों को प्रेम रुपी अमृत से सना हुआ, स्वादिष्ट बताया ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई ?

उत्तर- सुदामा की दीनदशा देखकर कृष्ण को अत्यंत दुःख हुआ। कृष्ण जो दया के सागर है । वे अपने मित्र के लिए फूट-फूट कर रोने लगे। उन्होंने सुदामा के पैरों को धोने के लिए न तो परात उठाई न ही पानी उन्होंने अपने मित्र के पैरों को अपने आँसुओं से धोया जो उनके अंतर मन की पीड़ा को स्पष्ट करता है।

प्रश्न 2. 'पानी परात को हाथ छुओ नहिं नैनन के जल सों पग धोए '। पंक्ति में वर्णित भाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- उक्त पंक्ति में भगवान श्रीकृष्ण का अपने परम मित्र सुदामा के प्रति अनन्य प्रेम प्रकट हुआ है। वे अपने बाल सखा की दयनीय दशा को देखकर अत्यंत दुखी हो जाते है । वे इतने दुखी हो जाते है कि पानी की बजाय अपने आँसुओं से मि त्र के पैरो को धोने लगते है। सच्चे अर्थो में श्रीकृष्ण एक भक्त वत्सल स्वामी हैं।

प्रश्न.3 अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नही खोज पाए तब उनके मन में क्या- क्या विचार आए ?

उत्तर- सुदामा के हृदय में ये भाव आए थे कि वे गलती से कहीं और पहुँच गए हैं। उनकी झोंपड़ी तो टूटी.फूटी थी, परन्तु अब वहाँ बड़े.बड़े महल थे । वे पहले ही दुखी थे और अब वव अपना घर भी खो बैठे थे ।

प्रश्न 4. सुदामा किसके कहने पर और क्यों द्वारिका पुरी गए?

उत्तर- सुदामा अपनी पत्नी के कहने पर द्वारिकापुरी गए। वहाँ जाने का उनका ,एक मात्र उ द्देश्य अपने मित्र से आर्थिक सहायता प्राप्त कर अपनी गरीबी को दूर करना था ।

अतिरिक्त प्रश्न..

1. उपानह शब्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर- जूते

2. सुदामा कौन थे वे श्रीकृष्ण के पास क्यों गए ?

उत्तर- सुदामा श्रीकृष्ण के मित्र थे वे कुछ मदद पाने के उद्देश्य से कृष्ण के पास गए थे ।

3 .सुदामा किस वेश भूषा में अपने मित्र श्रीकृष्ण के पास गए ?

उत्तर- सिर पर पगड़ी नहीं थी। शरीर पर कुर्ता नहीं था।जगह-जगह धोती फटी हुई थी और पैरों में जूते भी नहीं थे।

4. द्वारपाल ने सुदामा के बारे में श्रीकृष्ण को क्या बताया ?

उत्तर- प्रभु! दरवाजे पर एक गरीब और कमजोर ब्राहमण खड़ा है। वह आपसे मिलना चाहता है और अपना नाम सुदामा बता रहा है ।

5. श्रीकृष्ण ने सुदामा के दुःख को महादुख क्यों कहा है ?

उत्तर- उनके पैरों की फटी बिवाइयों और काँटों के जाल को देखकर ।

1. सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- सुदामा की दीनदशा को देखकर दुख के कारण श्री कृष्ण की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। उन्होंने सुदामा के पैरों को धोने के लिए पानी मँगवाया। परन्तु उनकी आँखों से इतने आँसू निकले की उन्ही आँसुओं से सुदामा के पैर धुल गए।

2. "पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।" पंक्ति में वर्णित भाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर:- प्रस्तुत दोहे में यह कहा गया है कि जब सुदामा दीन- हीन अवस्था में कृष्ण के पास पहुँचे तो कृष्ण उन्हें देखकर व्यथित हो उठे। श्रीकृष्ण ने सुदामा के आगमन पर उनके पैरों को धोने के लिए परात में पानी मँगवाया परन्तु सुदामा की दुर्दशा देखकर श्रीकृष्ण को इतना कष्ट हुआ कि वे स्वयं रो पड़े और उनके आँसुओं से ही सुदामा के पैर धुल गए। अर्थात् परात में लाया गया जल व्यर्थ हो गया।

3. "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।"

(क) उपर्युक्त पंक्ति कौन, किससे कह रहा है?

(ख) इस कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।

(ग) इस उपालंभ (शिकायत) के पीछे कौन-सी पौराणिक कथा है?

उत्तर:-

(क) उपर्युक्त पंक्ति श्रीकृष्ण अपने बालसखा सुदामा से कह रहे हैं।

(ख) अपनी पत्नी द्वारा दि ए गए चावल संकोचवश सुदामा श्रीकृष्ण को भेंट स्वरूप नहीं दे पा रहे हैं। परन्तु श्रीकृष्ण सुदामा पर दोषारोपण करते हुए इसे चोरी कहते हैं और कहते हैं कि चोरी में तो तुम पहले से ही निपुण हो।

(ग) बचपन में जब कृष्ण और सुदामा साथ-साथ संदीपन ऋषि के आश्रम में अपनी-अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। तभी एकबार जब श्रीकृष्ण और सुदामा जंगल में लकड़ियाँ एकत्र करने जा रहे थे तब गुरूमाता ने उन्हें रास्ते में खाने के लिए चने दिए थे। सुदामा श्रीकृष्ण को बिना बताए चोरी से चने खा लेते हैं। श्रीकृष्ण उसी चोरी का उपालंभ सुदामा को देते हैं।

4. द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा मार्ग में क्या- क्या सोचते जा रहे थे ? वह कृष्ण के व्यवहार से क्यों खीझ रहे थे? सुदामा के मन की दुविधा को अपने शब्दों में प्रकट कीजिए।

उत्तर:- द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा का मन बहुत दुखी था। वे कृष्ण द्वारा अपने प्रति किए गए व्यवहार के बारे में सोच रहे थे कि जब वे कृष्ण के पास पहुँचे तो कृष्ण ने आनन्द पूर्वक उनका आतिथ्य सत्कार किया था। क्या वह सब दिखावटी था ? वे कृष्ण के व्यवहार से खीझ रहे थे

क्योंकि उन्हें आशा थी कि श्रीकृष्ण उनकी दरिद्रता दूर करने के लिए ध न-दौलत देकर विदा करेंगे परंतु श्रीकृष्ण ने उन्हें चोरी की उलहाना देकर खाली हाथ ही वापस भेज दिया।

5. अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नहीं खोज पाए तब उनके मन में क्या- क्या विचार आए? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- द्वारका से लौटकर सुदामा जब अपने गाँव वापस आएँ तो अपनी झोंपड़ी के स्थान पर बड़े- बड़े भव्य महलों को देखकर सबसे पहले तो उनका मन भ्रमित हो गया कि कहीं मैं घूम फिर कर वापस द्वारका ही तो नहीं चला आया। फिर भी उन्होंने पूरा गाँव छानते हुए सबसे पूछा लेकिन उन्हें अपनी झोंपड़ी नहीं मिली।

6. निर्धनता के बाद मिलनेवाली संपन्नता का चित्रण कविता की अंतिम पंक्तियों में वर्णित है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- श्रीकृष्ण की कृपा से निर्धन सुदामा की दरिद्रता दूर हो गई। जहाँ सुदामा की टूटी-फूटी सी झोपड़ी रहा करती थी, वहाँ अब सोने का महल खड़ा है। कहाँ पहले पैरों में पहनने के लिए चप्पल तक नहीं थी, वहाँ अब घूमने के लिए हाथी घोड़े हैं , पहले सोने के लिए केवल यह कठोर भूमि थी और अब शानदार नरम-मुलायम बिस्तरों का इंतजाम है, कहाँ पहले खाने के लिए चावल भी नहीं मिलते थे और आज प्रभु की कृपा से खाने को मनचाही चीज उपलब्ध है। परन्तु वे अच्छे नहीं लगते।

• भाषा की बात

7. "पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सो पग धोए"

ऊपर लिखी गई पंक्ति को ध्यान से पढ़िए। इसमें बात को बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ाकर चित्रित किया गया है। जब किसी बात को इतना बढ़ा- चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है तो वहाँ पर अतिशयोक्ति अलंकार होता है। आप भी कविता में से एक अतिशयोक्ति अलंकार का उदाहरण छाँटिए।

उत्तर:- " कै वह टूटी-सी छानी हती, कहँ कंचन के अब धाम सुहावत।"- यहाँ अतिश्योक्ति अलंकार है। टूटी सी झोपड़ी के स्थान पर अचानक कंचन के महल का होना अतिश्योक्ति है।

पाठ 13

जहाँ पहिया है - पी . साईनाथ

पडुकोट्टई तमिलनाडु साइकिल चलाना एक सामाजिक आंदोलन है ? कुछ अजीब-सी बात है।है न! लेकिन चौंकने की बात नहीं है। पुडुकोट्टई की हज़ारों नवसाक्षर ग्रामीण महिलाओं के लिए यह अब आम बात है। अपने पिछड़ेपन पर लात मारने , अपना विरोध व्यक्त करने औ र उन जंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं , कोई-न-कोई तरीका लोग निकाल ही लेते हैं। कभी- कभी ये तरीके अजीबो-गरीब होते हैं। भारत के सर्वाधिक गरीब जिलों में सेएकहै पडुकोट्टई पिछले दिनों यहाँ की ग्रामीण महिलाओं ने अपनी स्वाधीनता , आजादी और गतिशीलता को अभिव्य क्त करने के लिए प्रतीक के में साइकिल को चुना है। उनमें से अधिकांश नवसाक्षर थीं। अगर हम दस वर्ष से कम उम्र की लड़कियों को अलग कर दें इसका अर्थ यह होगा कि यहाँ ग्रामीण महिलाओं के एक- चौथाई हिस्से ने साइकिल चलाना सीख लिया है और इन महिलाओं में से सत्तर हशार से भी अधिक महिलाओं ने 'प्रदर्शनएवं प्रतियोगिता' जैसे सार्वजनिक कार्यक्रमों में बड़े गर्व के साथ अपने नए कौशल का प्रदर्शन किया और अभी भी उनमें साइकिल चलाने की इच्छा जारी है। वहाँ इसके लिए कई 'प्रशिक्षण शिविर' चल रहे हैं।

प्रश्न 1 साईकिल चलने को सामाजिक आन्दोलन क्यों कहा गया ?

उत्तर- जब महिलाओं ने साईकिल चलाना शुरू किया तो यहएकआन्दोलन ही बन गया क्यों की यहाँ की सभी महिलाऐं साईकिल सीखने हेतु अग्रसर हुए ।

प्रश्न 2 नवसाक्षर शब्द से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- नवसाक्षर शब्द का अर्थ है साइकिल चलाना सीखने वाली ईएसआई महिलाएं जिन्होंने नयी नयी साईकिल चलानी सीखी है।

प्रश्न 3 साइकिल चलने ने यहाँ की महिलाओं को कैसे प्रभावित किया है ?

उत्तर- साईकिल चलाना सीखते ही ग्रामीण महिलाओं ने नई जागृति आई वे अपने आप आजाद महसूस करने लगीं उन्हें ऐसा लगा जैसे अपने पिछड़ेपन का विरोध कर वे अपने बन्धनों की जंजीरें तोड़ रही हैं उन्होंने अपनी स्व्च्चन्द्ता का यही रास्ता अपनाया ।

प्रश्न 4 पुदुकोट्टई जिला किस राज्य में आता है ?

उत्तर- पुदुकोट्टई जिला तमिलनाडु राज्य में है ।

अनुच्छेद 2

इस सारे मामले पर पुरुषों की क्या राय थी? इसके पक्ष में 'आर. साइकिल्स'के मालिक को तो रहना ही था। इस अके ले डीलर के यहाँ लेडी साइकिल की बिक्री में साल भर के अंदर काफी वृद्धि हुई। माना जा सकता है कि इस आँकड़े को दो कारणों से कम करके आँका गया। पहली बात तो यह है कि ढेर सारी महिलाओं ने जो लेडी साइकिल का इंतजार नहीं कर सकती थीं, जेंट्स साइकिलें खरीदने लगीं। दूसरे, उस डीलर ने बड़ी सर्तकता के साथ यह जानकारी मुझे दी थी उसे लगा कि मैं बिक्री कर विभाग का कोई आदमी हूँ।

प्रश्न 1 आर साइकिल्स के मालिक महिलाओं के पक्ष में क्यों थे ?

उत्तर- क्योंकि इस आन्दोलन की वजह से उनकी बिक्री काफ़ी बढ़ गयी थी ।

प्रश्न 2 महिलाओं ने लेडी साइकिल का इंतजार क्यों नही किया ?

उत्तर- क्योंकि महिलाएँ साइकिल सीखने के लिए बहुत उत्साहित थी और वे अपना समय व्यर्थ नहीं करना चाहती थी ।

प्रश्न 3 डीलर ने लेखक को क्या समझ कर जवाब दिया ?

उत्तर- डीलर ने लेखक को बिक्री कर विभाग का आदमी समझ कर जवाब दिया ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. साइकिल आन्दोलन से पुदुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में क्या बदलाव आये ?

उत्तर- साइकिल आन्दोलन से पुदुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में अनेक बदलाव आए। अब उन्हें बस की लम्बी पंक्ति में प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती थी। अब वे पुरुषों पर निर्भर नहीं थी। दूसरे स्थानों से सामान ढोने का कार्य भी साइकिल के माध्यम से स्वयं ही करने लगी। साइकिल चलाने से महिलाएँ विशेष प्रकार की स्वतन्त्रता महसूस करती हैं ।

प्रश्न 2. प्रारम्भ में इस आन्दोलन को चलाने में कौन-कौन सी बाधा आई ?

उत्तर- प्रारम्भ में इस आन्दोलन को चलाने में पुदुकोट्टई की महिलाओं को अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा। शुरू-शुरू में पुरुष साइकिल चलाने वाली स्त्रियों पर फब्तियाँ कसते थे। स्त्रियों को पुरुष प्रधान समाज में अपने साइकिल आन्दोलन के कारण अनेक मानसिक और शारीरिक कष्ट सहने पड़े ।

प्रश्न 3. प्रशिक्षित हो चुकी महिलाएँ प्रशिक्षण शिविर में क्या करती थीं ?

उत्तर- प्रशिक्षित हो चुकी महिलाएँ प्रशिक्षण शिविर में साइकिल सीखने वाली नई म हिलाओं को भरपूर सहयोग देती थी। वे उन में सीखने की इच्छा पर बल देती थी ताकि सभी महिलाएँ साइकिल चलाना भी सीख जाएँ ।

प्रश्न 4 पाठ में पहिया किस बात का प्रतीक है ।

उत्तर- पाठ में पहिया बदलते समय का प्रतीक है। पहिया हमें बताता है कि ह में समय अनुसार गति करनी चाहिए। परिस्थितियों के अनुसार हमें स्वयं को बदलना और संवारना चाहिए ।

अतिरिक्त प्रश्न

1 . साइकिल चलाने का लाभ किस-किस वर्ग की महिलाएँ लाभ उठा रही हैं ?

उत्तर- खेतिहर मजदूर पत्थर खदानों में काम करने वाली औरतें एवं गाँव में काम करने वाली नर्सें , बालवाड़ी कार्यकर्ता, ग्राम सेविकाएँ, अध्यापिकाएँ इसका लाभ उठा रही हैं ।

2. जमीला कौन है ?

उत्तर- पुदुकोट्टई की नवसाक्षर युवती है ।

3. महिलाएँ किस तरह के गीत गा रही थी ?

उत्तर- साइकिल चलाना सीखने को प्रोत्साहित करने वाले गीत ।

पाठ 14

अकबरी लोटा- अन्नपूर्णानन्द

इस कहानी में काल्पनिकता का सहा रा लेते हुए कहानीकार ने लाला झाऊलाल की समस्या का हल अत्यंत रोचक ढंग से किया गया है। वह उनके मित्र और एक अंग्रेज़ पात्र के माध्यम से यह भी बताने का प्रयास किया है कि दूसरे को नीचा दिखाने के लिए व्यक्ति कुछ भी कर सकता है । लाला झाऊलाल का बेढंगा लोटा किस तर ह से ऐतिहासिक लोटा बनकर अंग्रेज़ के संग्रहालय का अंग बन जाता है।

अनुच्छेद 1

लाला झाऊलाल को खाने- पीने की कमी नहीं थी। काशी के ठठेरी बाजार में मकान था। नीचे की दुकानों सेएकसौ रुपये मासिक के करीब किराया उतर आता था। अच्छा खाते थे , अच्छा पहनते थे, पर ढाई सौ रुपये तोएकसाथ आँख सेंकने के लिए भी न मिलते थे।इसलिए जब उनकी पत्नी ने एक दिन,का एक ढाई सौ रुपये की माँग पेश की, तब उनका जी एक बार जोर से सनसनाया और फिर बैठ गया। उनकी यह दशा देखकर पत्नी ने कहा डरिए मत , आप देने में असमर्थ हों तो मैं अपने भाई से माँग लूँ?

प्रश्न 1 झाऊ लाल का मकान कहाँ था ?

उत्तर- लाला झाऊ लाल का माकन कशी के ठठेरी बाजार में था ।

प्रश्न 2 पत्नी ने कितने रुपयों की मांग की ?

उत्तर- पत्नी ने ढाई सौ रुपयों की माँग की ।

प्रश्न 3 लाला झौलाल का जीवन कैसा था ?

उत्तर- लाला झाऊ लाल का जीवन तो सुखमयी था परन्तु उनके पास अधिक धन संपत्ति नहीं थी ।

अनुच्छेद 2

लाला झाऊलाल ने देखा कि इस भीड़ में प्रधान पात्रएकअंग्रेज़ है जो नखशिख से भीगा हुआ है और जो अपनेएकपैर को हाथ से सहलाता हुआ दूसरे पैर पर नाच रहा है। उसी के पास अपराधी लोटे को भी

देखकर लाला झाऊलाल जी ने फौरन दो और दो जोड़कर स्थिति को समझ लिया। गिरने के पूर्व लोटाएकदुकान के सायबान से टकराया। वहाँ टकराकर उस दुकान पर खड़े उस अंग्रेज़ को उसने सांगोपांग स्नान कराया और फिर उसी के बूट पर आ गिरा।

प्रश्न 1 भीड़ का प्रधान पात्र कौन था ?

उत्तर- भीड़ का प्रधान पात्रएकअंग्रेज़ था ।

प्रश्न 2 अंग्रेज़ की स्थिति का वर्णन करो ?

उत्तर- अंग्रेज़ नख शिख से भीगा हुआ था जो अपनेएकपैर सहलाता हुआ दूसरे पैर पर नाच रहा था ।

प्रश्न 3 अंग्रेज़ के ऊपर गिरने से पहले लोटा कहाँ टकराया ?

उत्तर- दुकान के सायबान से ।

गद्यांश 3

सोलहवीं शताब्दी की बात है। बादशाह हुमायूँ शेरशाह से हारकर भागा था और ¯सिध के रेगिस्तान में मारा- मारा फिर रहा था।एकअवसर पर प्यास से उसकी जान निकल रही थी। उस समयएकब्राह्मण ने इसी लोटे से पानी पिलाकर उसकी जान बचाई थी। हुमायूँ के बाद अकबर ने उस ब्राह्मण का पता लगाकर उससे इस लोटे को ले लिया और इसके बदले में उसे इसी प्रकार के दस सोने के लोटे प्रदान किए। यह लोटा सम्राट अकबर को बहुत प्यारा था। इसी से इसका नाम अकबरी लोटा पड़ा। वह बराबर इसी से वजू करता था। सन् 57 तक इसके शाही घराने में रहने का पता है। पर इसके बाद लापता हो गया। कलकत्ता के म्यूजियम में इसका प्लास्टर का मॉडल रखा हुआ है । पता नहीं यह लोटा इस आदमी के पास कैसे आया ? म्यूजियम वालों को पता चले तो फैंसी दाम देकर खरीद ले जाएँ।

प्रश्न 1 हुमायूँ किस से हर कर भाग गए थे ?

उत्तर- हुमायूँ शेर शाह से हार कर भाग गए थे ।

प्रश्न 2 हुमायूँ के बाद लोटा किसके पास गया ?

उत्तर- हुमायूँ के बाद लोटा अकबर के गया ।

प्रश्न 3 इस लोटे का नाम अकबरी लोटा कैसे पड़ा ?

उत्तर- अकबर को अत्यंत प्रिय होने के कारण इसका नाम अकबरी लोटा पड़ा ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया थाध्लिखिए ।

उत्तर- पंडित बिलवासी मिश्र लाला झाऊलाल के घनिष्ठ मित्र थे। अपने मित्र को कठिनाई में देख उसकी सहायता करने का निश्चय किया। जब पंडित जी के पास कहीं से भी रुपयों का प्रबंध नही हुआ तो उन्होंने अपनी पत्नी के संदूक में से ढाई सौरूपए चोरी किए । इस प्रकार से पंडित बिलवासी मिश्र ने रुपयों का प्रबंध किया ।

प्रश्न 2 अंग्रेज़ के सामने बिलवासी जी ने झाऊलाल को पहचाननें तक से क्यों इंकार कर दिया था ? आपके विचार से बिलवासी जी ऐसा अजीब व्यवहार क्यों कर रहे थे ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- अंग्रेज़ के सामने बिलवासी जी ने झाऊलाल को पहचाननें से इंकार कर दिया थाए उन्होंने अंग्रेज़ से कह दिया कि वे लाला जी के मित्र है। तो वह उन से कोई बात नही करेगा। वह तुरंत पुलिस थाने जाकर लाला जी के विरुद्ध रिपोर्ट करेगा और इसके बाद वह ह र्जाने की मांग भी कर सकता है लाला जी भलाई के लिए बिलवासी जी ने अपने व्यवहार में परिवर्तन किया और अंग्रेज़ को अपने तरीके से समझाने-बुझाने का प्रयत्न किया ।

प्रश्न 3. पाठ में पंडित बिलवासी मिश्र अपने मित्र झाऊलाल की मदद के लिए अपने घर में चोरी करते है। अपने विवेक आधार पर बताइए कि क्या चोरी करके किसी की सहायता करना ठीक है ?

उत्तर- मित्र की सहायता करना एक अच्छा काम है । किन्तु सहायता के नाम पर नैतिकता को भूल जाना ठीक नही है । मित्र के लिए चोरी जैसे किसी भी विचार को अपने मन में न आने दें। मित्र को सही सलाह देना तथा उसके लिए स्वयं को गलत कार्यो में उलझाने से बचाना ही सर्वथा उचित है।

प्रश्न 4. लाला झाऊलाल के बारे में आप क्या जानते है ? संक्षिप्त में उत्तर दीजिए।

उत्तर- लाला झाऊलाल काशी के ठठेरी बाजार में रहते थे। उन्हें खाने- पीने की कोई कमी नही थी वे अच्छा खाते और अच्छा पहनते थे।लेकिन वे थोड़े कंजूस प्रवृति के व्यक्ति थे। रूपए देने का नाम सुनकर उनका दिल बैठ जाता था।

अतिरिक्त प्रश्न

प्रश्न- कौन लोटे को रद्दी बता रहा था?

उत्तर- अंग्रेज़

प्रश्न- हुमायूँ की जान किस तरह बची थी?

उत्तर- रेगिस्तान में भटकते हुए उसेएकब्राह्मण ने पानी पिलाया था।

प्रश्न- मेजर डगलस कौन थे ?

उत्तर- उस अंग्रेज़ के पड़ोसी थे जिसे चोट लगी थी ।

प्रश्न- वज़ू करना क्या है ?

उत्तर- नमाज पढ़ने से पहले मुसलमान अपने हाथ पैर धोते है जिसे वज़ू करना कहते हैं ।

पाठ 15 सूरदास के पद

सूरदास

इस पाठ में सूरदास द्वारा रचित दो पद हैं। पहले पद में बालक कृष्ण अपनी चोटी के विषय में अपनी मैया यशोदा से संवाद कर रहे हैं। दूसरे पद में एक गोपी यशोदा से कृष्ण के माखन चोरी करने की शिकायत कर रही है । वात्सल्य रस की सुंदर अनुभूति इन पदों के द्वारा हो रही है।

मैया कबहुं बढ़ैगी चोटी।
किती बेर मोहि दूध पियत भइ यह अजहूं है छोटी॥
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों ह्वै है लांबी मोटी।
काढ़त गुहत न्हवावत जैहै नागिन-सी भुई लोटी॥
काचो दूध पियावति पचि पचि देति न माखन रोटी।
सूरदास त्रिभुवन मनमोहन हरि हलधर की जोटी॥

1. मैया किसे कहा गया है ?

उत्तर- यशोदा को

2. कौन कह रहा है ?

उत्तर- श्रीकृष्ण

3. अजहूँ का क्या अर्थ है ?

उत्तर- आज भी

4. बल शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है ?

उत्तर- बलराम के लिए

5. इस पद की भाषा कौन सी है ?

उत्तर- ब्रजभाषा

तेरैं लाल मेरौ माखन खायौ ।

दुपहर दिवस जानि घर सूनो ढूँढी.ढँढोरि आपही आयौ ।

खोलि किवारिएपैठि मंदिर मैंए दूध दही सब सखनि खावायौ ।

प्रश्न अभ्यास

1. कौन किससे कह रहा है ?

उत्तर- एक गोपी मैया यशोदा से कह रही है ।

2. यहाँ किसकी शिकायत हो रही है ?

उत्तर- श्रीकृष्ण की

3. उसके बारे में क्या शिकायत है ?

उत्तर- वह माखन चुरा लेता है ।

4 . दूध दही में कौन सा समास है ?

उत्तर- द्वंद्व समास

5. माखन चुराने वाले को क्या कहा जाता है ?

उत्तर- माखनचोर यानी श्री कृष्ण ।

अतिरिक्त प्रश्न

1. गोपी यशोदा के पास क्यों आई थी ?

उत्तर- श्रीकृष्ण की शिकायत करने के लिए ।

2. श्रीकृष्ण कब और किसके घर गए ?

उत्तर- दोपहर के समयए गोपी के घर गए।

3. गोपी यशोदा पर क्या आरोप लगाती है ?

उत्तर- तुमने अपने पुत्र को क्या सिखाया है ? तुमने ही क्या अनोखा पुत्र जन्मा है ?

4. उपमा अलंकार काएकउदाहरण लिखिए ।

उत्तर- नागिन सी भुई लोटी

5. इन पदों की भाषा कौन-सी है ?

उत्तर- ब्रज भाषा ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. श्री कृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या सोच रहे थे ?

उत्तर- श्री कृष्ण अपनी चोटी के विषय में सोच रहे थे कि न जाने क्यों उनकी चोटी छोटी क्यों है । बड़े भैया बलराम की चोटी की तरह मेरी चोटी न जाने कब बदेगी। माँ भी यही कहती है कि जल्दी मेरी चोटी बलराम भैया की तरह मोटी, घनी और लम्बी हो जाएगी ।

प्रश्न 2. तै ही पूत अनोखो जायो....पंक्तियों में ग्वालन के मन के कौन-कौन से भाव मुखरित हुए है ?

उत्तर- उक्त पंक्ति के माध्यम से ग्वालिन ने यशोदा मैया पर कटाक्ष किया है कि उन्होंने कोई अनोखा पुत्र नही जन्मा है। वह भी दूसरे बच्चों के समान है। लेकिन फिर भी उका बेटा कृष्ण माखन की चोरी करता है। इसलिए यशोदा तुम अपने पुत्र को समझाओ ।

प्रश्न 3. माखन खाते समय श्री कृष्ण थोड़ा-सा माखन गिरा क्यों देते हैं ?

उत्तर- वे ऐसा इसलिए करते है, ताकि किसी को यह प्या न चले कि माखन कृष्ण ने खाया है। लोग यही सोचें कि किसी पक्षी या किसी पशु ने इस तरह छिटका कर माखन खाया है ।

प्रश्न 4. सूरदास की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर- सूरदास भगवान श्री कृष्ण को अपना आराध्य मानते थे। वे परम कृष्ण भक्त थे। उनका जीवन कृष्ण से शुरू होकर कृष्ण पर ही जाकर समाप्त हुआ। पहले पद में उन्होंने कृष्ण के बाल सुलभरूप का सुंदर अंकन किया है। दूसरे पद में ग्वालिन द्वारा माता यशोदा को उलाहना देना व्यावहारिक जान पड़ता है। वास्तव में ग्वालिन और माँ के रूप में स्वयं सूरदास हैं ।

1. बालक श्रीकृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?

उत्तर:- माता यशोदा ने श्रीकृष्ण को बताया की दूध पीने से उनकी चोटी बलराम भैया की तरह हो जाएगी। श्रीकृष्ण अपनी चोटी बलराम जी की चोटी की तरह मोटी और बड़ी करना चाहते थे इस लोभ के कारण वे दूध पीने के लिए तैयार हुए।

2. श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या-क्या सोच रहे थे?

उत्तर:- श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में सोच रहे थे कि उनकी चोटी भी बलराम भैया की तरह लम्बी , मोटी हो जाएगी फिर वह नागिन जैसे लहराएगी।

3. दूध की तुलना में श्रीकृष्ण कौन-से खाद्य पदार्थ को अधिक पसंद करते हैं?

उत्तर:- दूध की तुलना में श्रीकृष्ण को माखन-रोटी अधिक पसंद करते हैं।

4. 'तैं ही पूत अनोखी जायौ' - पंक्तियों में ग्वालन के मन के कौन-से भाव मुखरित हो रहे हैं?

उत्तर:- 'तैं ही पूत अनोखी जायौ' - पंक्तियों में ग्वालन के मन
में यशोदा के लिए कृष्ण जैसा पुत्र पाने पर ईर्ष्या की भावना व कृष्ण के उनका माखन चुराने पर क्रोध के भाव मुखरित हो रहे हैं। इसलिए वह यशोदा माता को उलाहना दे रही हैं।

5. मक्खन चुराते और खाते समय श्रीकृष्ण थोड़ा-सा मक्खन बिखरा क्यों देते हैं?

उत्तर:- श्रीकृष्ण को माखन ऊँचे टंगे छींकों से चुराने में दिक्कत होती थी इसलिए माखन गिर जाता था तथा चुराते समय वे आधा माखन खुद खाते हैं व आधा अपने सखाओं को खिलाते हैं। जिसके कारण माखन जगह-जगह ज़मीन पर गिर जाता है।

6. दोनों पदों में से आपको कौन-सा पद अधिक अच्छा लगा और क्यों?

उत्तर:- दोनों पदों में प्रथम पद सबसे अच्छा लगता है। क्योंकि यहाँ बाल स्वभाववश प्राय : श्रीकृष्ण दूध पीने में आनाकानी किया करते थे। तब एक दिन माता यशोदा ने प्रलोभन दिया कि कान्हा ! तू नित्य कच्चा दूध पिया कर, इससे तेरी चोटी दाऊ (बलराम) जैसी मोटी व लंबी हो जाएगी। मैया के कहने पर कान्हा दूध पीने लगे। अधिक समय बीतने पर श्रीकृष्ण अपने बालपन के कारण माता से अनुनय-विनय करते हैं कि तुम्हारे कहने पर मैंने दूध पिया पर फिर भी मेरी चोटी नहीं बढ़ रही। उनकी माता से उनकी नाराज़गी व्यक्त करना, दूध न पीने का हट करना , बलराम भैया की तरह चोटी पाने का हट करना हृदय को बड़ा ही आनंद देता है।

7. दूसरे पद को पढ़कर बताइए कि आपके अनुसार उस समय श्रीकृष्ण की उम्र क्या रही होगी?

उत्तर:- दूसरे पद को पढ़कर लगता है कि उस समय श्रीकृष्ण की उम्र चार से सा त साल रही होगी तभी उनके छोटे-छोटे हाथों से सावधानी बरतने पर भी माखन बिखर जाता था।

• भाषा की बात

8. श्रीकृष्ण गोपियों का माखन चुरा- चुराकर खाते थे इसलिए उन्हें माखन चुरानेवाला भी कहा गया है। इसके लिए एक शब्द दीजिए।

उत्तर:- माखन चुरानेवाला - माखनचोर

9. श्रीकृष्ण के लिए पाँच पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उत्तर:- श्रीकृष्ण के पर्यायवाची शब्द - गोविन्द, रणछोड़, वासुदेव, मुरलीधर, नन्दलाल।

10. कुछ शब्द परस्पर मिलते- जुलते अर्थवाले होते हैं , उन्हें पर्यायवाची कहते हैं। और कुछ विपरीत अर्थवाले भी। समानार्थी शब्द पर्यायवाची कहे जाते हैं और विपरीतार्थक शब्द विलोम, जैसे -

पर्यायवाची- चंद्रमा-शशि, इंदु, राका मधुकर-भ्रमर, भौंरा, मधुप सूर्य-रवि, भानु,दिनकर

विपरीतार्थक-

दिन-रात

श्वेत-श्याम

शीत-उष्ण

पाठों से दोनों प्रकार के शब्दों को खोजकर लिखिए।

उत्तर:-

पर्यायवाची शब्द

बेनी - चोटी

मैया - जननी, माँ, माता

दूध - दुग्ध, पय, गोरस

काढ़त - गुहत

बलराम - दाऊ, हलधर

ढोटा - सुत, पुत्र, बेटा

विपरीतार्थक शब्द लम्बी - छोटी

स्याम - श्वेत

संग्रह - विग्रह

विज्ञ - अज्ञ

रात - दिन

प्रकट - ओझल

पाठ 16 पानी की कहानी

रामचंद्र तिवारी

इस पाठ में विज्ञान विषय का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। इसमें पानी का मानवीकरण करते हुए उसकी विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन किया गया है। इसमें पानी के निर्माण तथा अस्तित्व बचाए रखने की जानकारी दी गई है। इसके अलावा ओस की एक बूँद अनेक अवस्थाओं से गुजरकर वायु , बादल, समुद्र, ज्वालामुखी। फिर नदी ओर नल के पानी से होते हुए पेड़ की पत्ती तक की यात्रा करने का रोचक वर्णन बूँद की कहानी उसी की ज़ुबानी प्रस्तुत किया गया है ।

गद्यांश 1

मैं आगे बढ़ा ही था कि बेर की झाड़ी पर से मोती- सीएकबूँद मेरे हाथ पर आ पड़ी। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब मैंने देखा कि ओस की बूँद मेरी कलाई पर से सरककर हथेली पर आ गई। मेरी दृष्टि पड़ते ही वह ठहर गई। थोड़ी दरे में कतार के कतार की- सी झंकार सुनाई देने लगी। मैंनंे सोचा

कि कोई सितार बजा रहा होगा। चारों ओर देखा। कोई नहीं। फिर अनुभव हुआ कि यह स्वर मेरी हथेली से निकल रहा है। ध्या न से देखने पर मालूम हुआ कि बूँद के दो कण हो गए हैं और वे दोनों हिल-हिलकर यह स्वर उत्पन्न कर रहे हैं मानो बोल रहे हों। उसी सुरीली आवाज़ में मैंने सुना सुनो , सुनो...मैं चुप था। फिर आवाज़ आई , सुनो, सुनो। अब मुझसे रहा न गया। मेरे मुख से निकल गया , कहो, कहो। ओस की बूँद मानो प्रसन्नता से हिली और बोली मैं ओस हूँ।

प्रश्न 1 लेखक के हाथ पर क्या आकर गिरा?
उत्तर- ओस की बूँद।
प्रश्न 2 पानी की बूँद कहाँ से गिरी थी?
उत्तर- बेर की झड़ी से।
प्रश्न 3 सितार के तारों सी झंकार कहाँ से उत्पन्न हो रही थी?
उत्तर- ओस को बूँद से
प्रश्न 4 आवाज़ सुनकर लेखक ने क्या सोचा?
उत्तर- आवाज़ सुनकर लेखक ने सोचा कोई सितार बजा रहा है।
अनुच्छेद 2

मैं सोच रही थी कि यहाँ पर जीवों को कैसे दिखाई पड़ता होगा कि सामने ऐसा जीव दिखाई पड़ा मानो कोई लालटेन लिए घूम रहा हो। यह एक अत्यंत सुंदर मछली थी। इसके शरीर सेएकप्रकार की चमक निकलती थी जो इसे मार्ग दिखलाती थी। इसका प्रकाश देखकर कितनी छोटी- छोटी अनजान मछलियाँ इसके पास आ जाती थीं और यह जब भूखी होती थी तो पेट भर उनका भोजन करती थी। विचित्र है! जब मैं और नीचे समुद्र की गहरी तह में पहुँची तो देखा कि वहाँ भी जंगल है। छोटे ठिंगने, मोटे पत्ते वाले पेड़ बहुतायत से उगे हुए हैं। वहाँ पर पहाड़ियाँ हैं ,घाटियाँ हैं। इन पहाड़ियों की गुफ़ाओं में नाना प्रकार के जीव रहते हैं जो निपट अँधे तथा महा आलसी हैं।
प्रश्न 1 पानी की बूँद क्या सोच रही थी ?
उत्तर- पानी की बूँद ने अँधेरा देखकर सोचा कि यहाँ जीवों को कैसे दिखाई पड़ता होगा ।
प्रश्न 2 किसके शरीर से चमक उत्पन्न हो रही थी ?
उत्तर- एक सुन्दर मछली के शरीर से ।
प्रश्न 3 समुद्र में और गहरे में जाने पर क्या मिला ?
उत्तर- छोटे ठिगने पेड़,घाटियाँ, पहाड़ियाँ तथा आलसी जीव ।
पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर
प्रश्न 1. ओस की बूँद कब, कहाँ और कैसे पकड़ी गयी थी ?
उत्तर- ओस की बूँद भूमि के खनिजों को अपने शरीर में घुलाकर आनंद से घूम रही थी। उसका शरीर दुर्भाग्यवश एक जड़ के रोएँ से छू गया। उसके छूते ही वह काँपने लगी। बूँद ने दूर भागने की पूरी कोशिश की । लेकिन वह असफल रही। इस प्रकार जड़ के रोएँ द्वारा ओस की बूँद पकड़ी गई।
प्रश्न 2. ओस की बूँद क्रोध और घृणा से क्यों काँप उठी ?
उत्तर- ओस की बूँद क्रोध और घृणा से इसलिए काँप उठी क्योंकि पेड़ की जड़ें तथा जड़ों पर उगने वाले रोएँ बड़े ही निर्दय होते है। वे असं ख्य बूंदोंएवं जल .कणों को बल .पूर्वक पृथ्वी से खींच लेते है । और अधिकांश का सब कुछ छीनकर उन्हें बाहर निकाल देते है।
प्रश्न 3. हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को पानी ने अपना पूर्वज क्यों कहा है ?

उत्तर- हजारों वर्ष पहले हाइड्रोजन और ऑक्सीजन नामक दो गैसें सूर्यमंडल में लपटों के रूप में विद्यमान थी। हाइड्रोजन और ऑक्सीजन की रासायनिक क्रिया के फलस्वरूप पानी का जन्म हुआ। इसलिए पानी ने हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को अपना पूर्वज माना है ।

प्रश्न 4. जलमंडल किसे कहते है ?

उत्तर- पृथ्वी का वह भाग जो जल से घिरा रहता है , जलमंडल कहलाता है। इसका निर्माण नदियों , झीलों, समुद्रों एवं महासागरों के द्वारा होता है। पृथ्वी की सतह का 70% से अधिक भाग जल से ढका हुआ है।

अतिरिक्त प्रश्न

1. यह पाठ किस शैली में लिखा गया ?

उत्तर- आत्मकथात्मक शैली में

2. लेखक की हथेली पर पडी बूँद किसके इन्तजार में थी ?

उत्तर- सूर्योदय के इन्तजार में

3. पेड़ की पत्तियों तक आने से पहले बूँद कहाँ थी ?

उत्तर- ज़मीन में इधर उधर घूम रही थी ।

4. बूँद लेखक की हथेली पर क्यों कूदी थी ?

उत्तर- अपनी जान बचाने के लिए,पत्तियों पर सिकुड़ी बैठी थी ।

5. लाल पीला पड़ना मुहावरे का क्या अर्थ है ?

उत्तर- क्रोधित होना ।

1. लेखक को ओस की बूँद कहाँ मिली?

उत्तर:- लेखक को बेर की झाड़ी पर ओस की बूँद मिली।

2. ओस की बूँद क्रोध और घृणा से क्यों काँप उठी?

उत्तर:- पेड़ों की जड़ों में निकले रोएँ द्वारा जल की बूँदों को बलपूर्वक धरती के भूगर्भ से खींच लाना व उनको खा जाना याद करते ही बूँद क्रोध व घृणा से काँप उठी।

3. हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को पानी ने अपना पूर्वज/पुरखा क्यों कहा?

उत्तर:- जब ब्रह्मांड में पृथ्वी व उसके साथी ग्रहों का उद्भव भी नहीं हुआ था तब ब्रह्मांड में हाइड्रोजन व ऑक्सीजन दो गैसें सूर्यमंडल में लपटों के रूप में विद्यमान थीं। ऑक्सीजन वहाइड्रोजन के बीच रासायनिक क्रिया हुई। दोनों के संयोग से पानी का जन्म हुआ। इसलिए बूँद ने इन दोनों को अपना पूर्वज कहा है।

4. "पानी की कहानी" के आधार पर पानी के जन्म और जीवन-यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर:- पानी का जन्म (हद्रजन) हाइड्रोजन व (ओषजन) ऑक्सीजन के बीच रासायनिक प्रक्रिया द्वारा होता है। जब ब्रह्मांड में पृथ्वी व उसके साथी ग्रहों का उद्भव भी नहीं हुआ था तबब्रह्मांड में हाइड्रोजन व ऑक्सीजन दो गैसें सूर्यमंडल में लपटों के रूप में विद्य मान थीं।किसी उल्कापिंड के सूर्य से टकराने से सूर्य के टुकडें कड़े हो गए उन्हीं टुकड़ों में से एकटुकड़ा पृथ्वी रूप में उत्पन्न हुआ और इसी ग्रह में ऑक्सीजन व हाइड्रोजन के बीच रासायनिक क्रिया हुई और दोनों के संयोग से पानी का जन्म हुआ। सर्वप्रथम बूँद भाप के रूप में पृथ्वी के वातावरण में ईद- गिर्द घूमती रहती है , तत्पश्चात ठोस बर्फ के रूप में विद्यमान हो जाती है। समुद्र से होती हुई वह गर्म- धारा से मिलकर ठोसरूप को त्यागकर जल का रूप धारण कर लेती है।

5. कहानी के अंत और आरंभ के हिस्से को स्वयं पढ़कर देखिए और बताइए कि ओस की बूँद लेखक को आपबीती सुनाते हुए किसकी प्रतीक्षा कर रही थी?

उत्तर:- कहानी के अंत और आरंभ के हिस्से को पढ़कर यह पता चलता है कि ओस की बूँद सूर्य उदय की प्रतीक्षा कर रही थी।

6. समुद्र के तट पर बसे नगरों में अधिक ठंड और अधिक गरमी क्यों नहीं पड़ती?

उत्तर:- समुद्र के तट पर बसे नगरों में अधिक ठंड और अधिक गरमी नहीं पड़ती क्योंकि वहाँ के वातावरण में सदा नमी होती है।

7. पेड़ के भीतर फव्वारा नहीं होता तब पेड़ की जड़ों से पत्ते तक पानी कैसे पहुँचता है ? इस क्रिया को वनस्पति शास्त्र में क्या कहते हैं?

उत्तर:- पेड़ के भीतर फव्वा रा नहीं होता तब पेड़ की जड़ों से पत्ते तक पानी पहुँचता है क्योंकि पेड़ की जड़ों व तनों में जाइलम और फ्लोएम नामक वाहिकाएँ होती हैं जो पानी जड़ों सेपत्तियों तक पहुँचाती हैं। इस क्रिया को वनस्पति शास्त्र में 'संवहन' (ट्रांसपाईरेशन) कहते हैं।

• भाषा की बात

8. किसी भी क्रिया को पूरी करने में जो भी संज्ञा आदि शब्द संलग्न होते हैं , वे अपनी अलग-अलग भूमिकाओं के अनुसार अलग-अलग कारकों में वाक्य मेंदिखाई पडते हैं ; जैसे - "वह हाथों से शिकार को जकड़ लेती थी।"

जकड़ना क्रिया तभी संपन्न हो पाएगी जब कोई व्यक्ति (वह) जकड़नेवाला हो, कोई वस्तु (शिकार) हो जिसे जकड़ा जाए। इन भूमिकाओं की प्रकृति अलग- अलग है। व्याकरण में ये भूमिकाएँ कारकों के अलग-अलग भेदों; जैसे - कर्ता, कर्म, करण आदि से स्पष्ट होती हैं।

अपनी पाठ्यपुस्तक से इस प्रकार के पाँच और उदाहरण खोजकर लिखिए और उन्हें भलीभाँति परिभाषित कीजिए।

उत्तर:- 1. आगे एक और बूँद मेरा हाथ पकड़कर ऊपर खींच रही थी।

पकड़कर - सबंध कारक

2. हम बड़ी तेजी से बाहर फेंक दिए गए।

तेज़ी से - अपादान कारक

3. मैं प्रति क्षण उसमें से निकल भागने की चेष्टा में लगी रहती थी।

मैं - कर्ता

4. वह चाकू से फल काटकर खाता है।

चाकू से - करण कारक

5. बदलू लाख से चूड़ियाँ बनाता है।

लाख से - करण कारक

पाठ 17 .बाज और साँप

निर्मल वर्मा

इस पाठ में डॉ प्राणियों के माध्यम से उनके जीने के ढंग का वर्णन है । प्राणी बाज जो साहस का प्रतीक है , वह अपनी जान की परवाह किए बिना आसमान की ऊँचाइयाँ नापना जानता है। वह स्वतंत्रता को अपनी जान से भी बढ़कर चाहता है। दूसरा प्राणी सांप अपनी नम एवं अँधेरी खोखल तक ही सीमित रहता है। बाज का साहस उस कायर प्राणी में भी भर है।

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

समुद्र के किनारे ऊँचे पर्वत की अँधेरी गुफ़ा में एक साँप रहता था। समुद्र की तूफानी लहरें धूप में चमकतीं, झिलमिलातीं और दिन भर पर्वत की चट्टानों से टकराती रहती थीं। पर्वत की अँधेरी घाटियों मेंएकनदी भी बहती थी। अपने रास्ते पर बिखरे पत्थरों को तोड़ती , शोर मचाती हुई यह नदी बड़े जोर से समुद्र की ओर लपकती जाती थी। जिस जगह पर नदी और समुद्र का मिलाप होता था , वहाँ लहरें दूध के झाग-सी सफेद दिखाई देती थीं। अपनी गुफ़ा में बैठा हुआ साँप सब कुछ देखा करता लहरों का गर्जन, आकाश में छिपती हुई पहाड़ियाँ, टेढ़ी-मेढ़ी बल खाती हुई नदी की गुस्से से भरी आवाजें। वह मन ही मन खुश होता था कि इस गर्जन- तर्जन के होते हुए भी वह सुखी और सुरक्षित है। कोई उसे दुख नहीं दे सकता। सबसे अलग, सबसे दूर, वह अपनी गुफ़ा का स्वामी है। न किसी से लेना , न किसी से देना।

प्रश्न 1 साँप कहाँ रहता था ?

उत्तर- साँप एक गुफ़ा में रहता था ।

प्रश्न 2 समुद्र की तूफानी लहरें धुप में कैसी लगती थी ?

उत्तर- चमकती झिलमिलाती हुई ।

प्रश्न 3 नदी किससे मिलने के लिए उतावली थी ?

उत्तर- समुद्र से ।

प्रश्न 4 मन ही मन में साँप क्यों खुश हो रहा था ?

उत्तर- उसे लगता था कि सागर की गर्जन तर्जन से दूर वह सुखी और सुरक्षित है।

गद्यांश 2

बाज की ऐसी करुण चीख सुनकर साँप कुछ सिटपिटा- सा गया।एक क्षण के लिए उसके मन में उस आकाश के प्रति इच्छा पैदा हो गई जिसके वियोग में बाज इतना व्याकुल होकर छटपटा रहा था। उसने बाज से कहा यदि तुम्हें स्वतंत्रता इतनी प्यारी है तो इस चट्टा न के किनारे से ऊपर क्यों नहीं उड़ जाने की कोशिश करते। हो सकता है कि तुम्हारे पैरों में अभी इतनी ताकत बाकी हो कि तुम आकाश में उड़ सको। कोशिश करने में क्या हर्ज है बाज में एक नयी आशा जग उठी। वह दूने उत्साह से अपने घायल शरीर को घसीटता हुआ चट्टान के किनारे तक खीं च लाया। खुले आकाश को देखकर उसकी आँखें चमक उठीं। उसने एक गहरी, लंबी साँस ली और अपने पंख फैलाकर हवा में कूद पड़ा।

प्रश्न 1 साँप क्यों छटपटा गया ?

उत्तर- बाज की चीख सुनकर साँप छटपटा गया ।

प्रश्न 2 साँप के मन में आकाश में उड़ने की लालशा क्यों गयी ?

उत्तर- बाज की ख़ुशी को देखकर साँप के मन में आकाश में उड़ने की इच्छा जगी ।

प्रश्न 3 बाज ने उड़ने की अंतिम कोशिश कैसे की ?

उत्तर- साँप अपने घायल शरीर को घसीटता हुआ चट्टान तक ले गया औरएकलम्बी साँस लेकर चट्टान से कूद गया।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. घायल होने के बाद भी बाज ने यह क्यों कहाए मुझे कोई शिकायत नहीं है। विचार प्रकट कीजिए ?

उत्तर- बाज के अनुसार उसने अपनी जिंदगी जी भर के जी ली है। कोई ऐसा सुख नहीं है जो उसने न भोगा हो। इसलिए बाज को अपनी जिंदगी से कोई शिकायत नहीं है।

प्रश्न 2. बाज जिंदगी भर आकाश में ही उड़ता रहा, फिर घायल होने के बाद भी वह उडऩा क्यों चाहता था ?

उत्तर- अपने अंतिम समय में भी बाज बहादुरी का परिचय देते हुए अपने जीवन की सार्थकता को सि . करना चाहता था। यही उसका लक्ष्य था। इसलिए उसने अंतिम समय में उड़ान भरने का निश्चय किया।

प्रश्न 3. साँप उडऩे की इच्छा को मूर्खतापूर्ण मानता था। फिर उसने उडऩे की कोशिश क्यों की ?

उत्तर- अंतिम समय में बाज को उडऩे की कोशिश कर देखकर साँप के मन में भी जिज्ञासा उत्पन्न हो गई। वह सोच में पड़ गया कि इस आकाश में आखिर है क्या ? इसलिए उसने उडऩे की कोशिश की।

प्रश्न 4. बाज के लिए लहरों ने गीत क्यों गाया था ?

उत्तर- बाज के लिए लहरों ने गीत गाया था ताकि संसार बाज के जीवन से प्रेरणा ले और अपना जीवन साहसपूर्वक बिताए।

प्रश्न 5. घायल बाज को देखकर साँप खुश क्यों हुआ होगा ?

उत्तर- बाज साँप का परम शत्रु है। दोनों में जाति से शत्रुता होती है। घायल बाज से साँप को कोई खतरा नहीं थाए इसलिए साँप खुश था।

अतिरिक्त प्रश्न..

1.बाज कहाँ गिरा और क्यों ?

उत्तर- नदी में,क्योंकि घायल होने से पंख टूट गए और वह अपना बोझ संभाल नहीं सका ।

2.बाज की करुणचीख का साँप पर क्या असर हुआ ?

उत्तर- साँप के मन में भी आकाश में उड़ने की इच्छा जाग उठी ।

3.लहरें गीत क्यों गा रही थी ?

उत्तर- बाज की वीरता ,साहस के साथ शत्रुओं का मुकाबला करने तथा उसकी स्वतन्त्रप्रियता के लिए गीत गा रहा है।

4.बाज का चरित्र हमें क्या शिक्षा दे रहा है ?

उत्तर- खतरों का सा मना करते समय यदि प्राणों की बाजी लगानी पड़े तो भी हमें पीछे नहीं हटना चाहिए।

5- दूधके समान सफ़ेद झाग में कौन सा अलंकार है ?

उत्तर- उपमा अलंकार

6. साँप की गुफ़ा कहाँ थी ?

उत्तर- साँप की गुफ़ा समुद्र के किनारे ऊँचे पर्वत में थी ।

7. बाज किसका प्रतीक है ?

उत्तर- साहस एवं वीरता और स्वतंत्रता का प्रतीक है ।

8.नदी कहाँ बहती है ?

उत्तर- पर्वत की अँधेरी घाटियों में ।

9. साँप द्वारा प्रेरित करने पर बाज पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर- बाज में एक नया जोश भर गया। उसने अपने पंख फैलाए और उड़ने के लिए हवा में कूद पड़ा ।

10. दुबारा उड़ने पर घायल बाज का स्वागत किसने किया ?

उत्तर- लहरों ने ।

1. घायल होने के बाद भी बाज ने यह क्यों कहा, "मुझे कोई शिकायत नहीं है।" विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर:- घायल होने के बाद भी बाज ने यह कहा कि - "मुझे कोई शिकायत नहीं है।" उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वह किसी भी कीमत पर समझौतावादी जीवन शैली पसंद नहीं करताथा। वह अपने अधिकारों के लिए लड़ने में विश्वास रखता था। उसने अपनी ज़िंदगी को भरपूर भोगा। वह असीम आकाश में जी भरकर उड़ान भर चुका था।जब तक उसके शरीर मेंताकत रही तब तक ऐसा कोई सुख नहीं बचा जिसे उसने न भोगा हो। वह अपने जीवन से पूर्णतः संतुष्ट था।

2. बाज ज़िंदगी भर आकाश में ही उड़ता रहा फिर घायल होने के बाद भी वह उड़ना क्यों चाहता था?

उत्तर:- बाज ज़िंदगी भर आकाश में उड़ता रहा , उसने आकाश की असीम ऊँचाइयों को अपने पंखों से नापा। बाज साहसी था। वह किसी भी कीमत पर समझौतावादी जीवन शैली पसंदनहीं करता था। अतः कायर की मौत नहीं मरना चाहता था। वह अंतिम क्षण तक जीवन की आवश्यकताओं के लिए संघर्ष करना चाहता था।

3. साँप उड़ने की इच्छा को मूर्खतापूर्ण मानता था। फिर उसने उड़ने की कोशिश क्यों की?

उत्तर:- साँप उड़ने की इच्छा को मूर्ख तापूर्ण मानता था क्योंकि वह मानता था कि वह उड़ने में सक्षम नहीं है। पर जब उसने बाज के मन में आकाश में उड़ने के लिए तड़प देखी तब साँप के मन में भी उत्सुकता जागी कि आकाश का मुक्त जीवन कैसा होता है ? इस रहस्य का पता लगाना ही चाहिए। तब उसने भी आकाश में एक बार उड़ने की कोशिश करने का निश्चय किया।

4. बाज के लिए लहरों ने गीत क्यों गाया था?

उत्तर:- बाज की बहादुरी पर प्रसन्न होकर लहरों ने गीत गाया था। उसने अपने प्राण गँवा दिए परन्तु ज़िंदगी के खतरे का सामना करने से पीछे नहीं हटा।

5. घायल बाज को देखकर साँप खुश क्यों हुआ होगा?

उत्तर:- साँप का शत्रु बाज है चूँकि वो उसका आहार होता है। घायल बाज उसे किसी प्रकार का आघात नहीं पहुँचा सकता था इसलिए घायल बाज को देखकर साँप के लिए खुश होनास्वाभाविक था।

6. कहानी में से वे पंक्तियाँ चुनकर लिखिए जिनसे स्वतंत्रता की प्रेरणा मिलती हो।

उत्तर:- कहानी की स्वतंत्रता से संबंधित पंक्तियाँ -

1. जब तक शरीर में ताकत रही , कोई सुख ऐसा नहीं बचा जिसे न भोगा हो। दूर- दूर तक उडानें भरी हैं, आकाश की असीम ऊँचाइयों को अपने पंखों से नाप आया हूँ।

2. "आह! काश, मैं सिर्फ एक बार आकाश में उड पाता।"

3. पर वह समय दूर नहीं है, जब तुम्हारे खून की एक- एक बूँद जिंदगी के अँधेरे में प्रकाश फैलाएगी और साहसी, बहादुर दिलों में स्वतंत्रता और प्रकाश के लिए प्रेम पैदा करेगी।

7. मानव ने भी हमेशा पक्षियों की तरह उड़ने की इच्छा की है। आज मनुष्य उड़ने की इच्छा किन साधनों से पूरी करता है।

उत्तर:- मानव ने आदिकाल से ही पक्षियों की तरह उड़ने की इच्छा मन में रखी है। किन्तु शारीरिक असमर्थता की वजह से उड़ नहीं पा रहा था जिसका परिणाम यह हुआ कि मनुष्य हवाईजहाज का आविष्कार कर दिखाया। आज मनुष्य अपने उड़ने की इच्छा की पूर्ति हवाई जहाज , हेलीकॉप्टर, गैस-बैलून आदि से करता है।

• भाषा की बात

8. कहानी में से अपनी पसंद के पाँच मुहावरे चुनकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर:- 1. भाँप लेना - बच्चों का मुँह देखकर माता जी ने परीक्षा का क्या नतीजा आया होगा यह भाँप लिया।

2. हिम्मत बाँधना - मित्र के आने पर ही परीक्षा के लिए राहुल की हिम्मत बँधी।

3. अंतिम साँस गिनना - दादाजी की गिरती साँसें देखकर माता जी ने स्थिति भाँप ली वे कि वे उनकी अंतिम साँस गिन रहे हैं।

4. मन में आशा जागना - शिक्षिका की कहानी ने मेरे मन में आशा जगा दी।

5. प्राण हथेली में रखना - सिपाही ने देशवासियों की जान बचाने के लिए अपने प्राणों को हथेली में रख देते हैं।

9. 'आरामदेह' शब्द में 'देह' प्रत्यय है। यहाँ 'देह' 'देनेवाला' के अर्थ में प्रयुक्त है। देनेवाला के अर्थ में 'द', 'प्रद', 'दाता', 'दाई' आदि का प्रयोग भी होता है , जैसे - सुखद, सुखदाता, सुखदाई, सुखप्रद। उपर्युक्त समानार्थी प्रत्ययों को लेकर दो-दो शब्द बनाइए।

उत्तर:- प्रत्यय शब्द

द - सुखद, दुखद

दाता - परामर्शदाता, सुखदाता

दाई - सुखदाई, दुखदाई

देह - विश्रामदेह, लाभदेह, आरामदेह

प्रद - लाभप्रद, हानिप्रद, शिक्षाप्रद

पाठ.18

टोपी

- संजय

इस पाठ में लेखक ने एक लोक कथा का पुन सृजन किया है। सामाजिक सरोकारों से युक्त यह कथा राजा और प्रजा के बीच संबंधों का ज्ञान कराती है राजतन्त्र व प्रजातंत्र के बीच अंतर समझाने में यह कहानी बहुत ही सहायक है। एक नन्हीं सी गौरैया को माध्यम बनाकर कर्तव्यनिष्ठ होने की प्रेर णा इस कहानी से मिलती है।

गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

एक थी गवरइया और कथा गवरा। दोनों एक दूजे के परम संगी। जहाँ जाते , जब भी जाते, साथ ही जाते। साथ हँसते , साथ ही रोते , एक साथ खाते- पीते,एक साथ सोते। भिनसार होते ही खेतों से निकल पड़ते दाना चुगने और झुटपुटा होते ही खेतों में आ घुसते। थकान मिटाते और सारे दिन के देखे-सुने में हिस्सेदारी बटाते।एक शाम गवरइया बोली , आदमी को देखते हो ? कैसे रंग-बिरंगे कपड़े पहनते हैं! कितना फबता है उन पर कपड़ा! खाक फबता है! गवरा तपाक से बोला, कपड़ा पहन लेने के बाद तो आदमी और बदसूरत लगने लगता है।

प्रश्न 1 गवरइया और गवरा खेतों में किस समय जाते थे ?

उत्तर- भिनसार होते ही ।

प्रश्न 2 सारे दिन के किस्से गवरइया और गवरा कहाँ जाकर सुनते थे ?

उत्तर- खेतों में

प्रश्न 3 गवरइया ने गवरा से क्या कहा ?

उत्तर- गवरइया ने कहा आदमी पर कपडे कैसे फबते हैं ?

प्रश्न 4 गवरा ने गवरइया को क्या जवाब दिया ?

उत्तर- गवरा बोला कपड़ा पहनने के बाद आदमी और भी बदसूरत लगता है ।

गद्यांश 2

कदम-कदम पर मिलते कामगारों के सहयोग ने गवरइया को आगे बढ़ने पर उकसा दिया। इसके बाद वे दोनोंएकबुनकर के पास गए और इसरार करने लगे,बुनकर भइया, बुनकर भइया, इस कते सूत से कपड़ा बुन दो। बुनकर इन्हें अगबग होकर देखने लगा , हटते हो कि नहीं यहाँ से! देखते नहीं, अभी मुझे राजा जी के लिए बागा बुनना है। अभी थोड़ी देर बाद ही राजा जी के कारिंदे हाजिर हो जाएँगे। साव करे भाव तो चबाव करे चाकर। इतना कहकर बुनकर अपने काम में मशगूल हो गया।

प्रश्न 1 गवरइया को आगे बढ़ने के लिए किन बातों ने उकसा दिया ?

उत्तर- गवरइया को कदम. कदम पर मिलने वाले कामगारों ने ।

प्रश्न 2 गवरइया सूत लेजाकर किसके पास गयी?

उत्तर- बुनकर के पास ।

प्रश्न 3 बुनकर किसका काम कर रहा था?

उत्तर- बुनकर रजा का काम कर रहा था ।

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. गवरइया और गवरा के बीच किस बात पर बहस हुई और गवरइया को अपनी इच्छा पूरी करने का अवसर कैसे मिला ?

उत्तर- आदमी के कपड़े पहनने की बात को लेकर गवरइया और गवरा में बहस हुई। एकदिन गवरइया को रुई का फाहा मिला। उसने उसे धुनवाया कपड़ा बुनवाया फिर टोपी सिलवाई। इसी के द्वारा उसे टोपी पहनने की इच्छा पूरी करने का अवसर मिला।

प्रश्न 2. टोपी बनवाने के लिएगवरइया किस किस के पास गई ? टोपी बनने तक के ,क.एक कार्य को लिखी।

उत्तर- टोपी बनवाने के लिएगवरइया.ई लेकर सबसे पहले धुनिया के पास गई। उसके बाद कोरी से.ई से सूत कतवाया। बुनकर से कपड़ा बनवाया और अंत में दर्जी से टोपी सिलवाई।

प्रश्न 3. गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुंदने क्यों जड़ दिए ?

उत्तर- गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुंदने खुश हो कर दे दिए क्योंकिगवरइया ने दर्जी को टोपी बनाने के लिए अपने कपड़े में से आधा कपड़ा दे दिया था।

प्रश्न 4. गवरइया और गवरे की बहस के तर्कों को एक करें।

उत्तर- 1.गवरइया.. आदमी को देखते हो ? कैसे रंग.बिरंगे कपड़े पहनते हैं। कितना फबता है उन पर। लगता है आज लट जीरा चुग गए हों। कपड़े केवल अच्छा लगने के लिए नहीं मौसम की मार से बचने के लिए भी पहनता है आदमी। फिर भी आदमी कपड़ा पहनने से बाज नहीं आता। नित नए-नए लिबास सिलवाता है।

2. गवरा.. खाक फबता है। कपड़ा पहन लेने के बाद तो आदमी आर बदसूरत लगने लगता है। कपड़े पहन लेने के बाद आदमी की कुदरती खूबसूरती ही ढँक जाती है। अब तू ही सोच अभी तो तेरी सुघड़ काया का,एक कटाव मेरे सामने है। रोंवें- रोंवें की रंगत मेरी आँखों में चमक रही है। तू समझती नहीं। कपड़े पहनकर जाड़ा,गरमी, बरसात सहने की सकत भी जाती रही है और इस कपड़े में बड़ा लफड़ा है।

प्रश्न5. कारीगर के परिश्रम का उचित मूल्य न मिलने पर उसकी प्रतिक्रिया क्या होगी ?

उत्तर-1. यदि किसी कारीगर को उसकी मेहनत का उचित मूल्य नहीं मिलेगा तो वह कार्य पूरा नहीं करेगा। यदि करेगा तो फुर्ती से या खूबसूरती से नहीं करेगा।

2. गवरइया के स्वभाव से यह प्रमाणित होता है कि कार्य की सफलता के लिए उत्साह आवश्यक है। सफलता के लिए उत्साह की आवश्यकता क्यों पड़ती है ?

उत्तर- किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए मन में उत्साह होना आवश्यक है । यदि हम किसी भी कार्य को बेमन से करेंगे तो निश्चय ही हमें उस कार्य में सफलता नहीं मिलेगी।

अतिरिक्त प्रश्न..

1.लेखक ने परम संगी किसे कहा है ?

उत्तर- गवरइया और गवरे को ।

2.गवरइया और गवरे की दिनचर्या क्या थी ?

उत्तर- प्रात: काल होते ही दाना चुगने जाना तथा अपने दैनिक कार्य करना ।

3.टोपी कहानी से तुम्हे क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर- हमें मुफ्त में कार्य नही करवाना चाहिए तथा काम के बदले पूरा पैसा देना चाहिए ।

4.टोपी पहनाना मुहावरे का क्या अर्थ है ?

उत्तर- मूर्ख बनाना

5.टोपी बनाने में किस-किस का योगदान रहा ?

उत्तर- धुनिया, कोरी, बुनकर और दर्जी का ।

1. गवरइया और गवरा के बीच किस बात पर बहस हुई और गवरइया को अपनी इच्छा पूरी करने का अवसर कैसे मिला?

उत्तर:- गवरइया और गवरा के बीच आदमी के वस्त्र पहनने को लेकर बहस हुई। गवरइया वस्त्र पहनने के पक्ष में थी तथा गवरा विपक्ष में था। गवरइया को आदमी द्वारा रंग- बिरंगे कपड़ेपहनना अच्छा लग रहा था जबकि गवरा का कहना था कि कपड़ा पहन लेने के बाद आदमी और बदसूरत लगने लगता है। कपड़े पहन लेने के बाद आदमी की कुदरती ख़ूबसूरतीढँक जाती है। उसी बहस के दौरान गवरइया ने अपनी टोपी पहनने की इच्छा को व्यक्त किया। उसकी इच्छा तब पूरी हुई जब एक दिन घूरे पर चुगते-चुगते उसे रुई का एक फाहामिल गया।

2. टोपी बनवाने के लिए गवरइया किस-किस के पास गई? टोपी बनने तक के एक-एक कार्य को लिखें।

उत्तर:- टोपी बनवाने के लिए गवरइया धुनिया, कोरी, बुनकर और दर्जी के पास गई। धुनिया के पास रुई धुनवा कर वह उसे लेकर कोरी के पास जा पहुँची। उसे कोरी से कतवा लिया। कतेसूत को लेकर वह बुनकर के पास गई उससे बुनकर से कपड़ा बुनवाया। कपड़े को लेकर वह दर्जी के पास गई। उसने उस कपड़े से गवरइया की टोपी सिल दी।

3. गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने क्यों जड़ दिए?

उत्तर:- गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने लगाए क्योंकि दर्जी को वाजिब मजदूरी मिली थी , जिससे वह खुश था। दर्जी राजा औए उसके सेवकों के कपड़े सिलता था जो उसे बेगारकरवाते थे। लेकिन गवरइया ने अपनी टोपी सिलवाने के बदले में दर्जी को मजदूरी स्वरूप आधा कपड़ा दिया।

4. गवरइया के स्वभाव से यह प्रमाणित होता है कि कार्य की सफलता के लिए उत्साह आवश्यक है। सफलता के लिए उत्साह की आवश्यकता क्यों पड़ती है,तर्क सहित लिखिए।

उत्तर:- सफलता के लिए उत्साह आवश्यक है। कहा भी गया है कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत। उत्साह से ही हमारे मन में किसी भी कार्य के प्रति जागरूकता उत्प न्न होती है। यदिहम किसी भी कार्य को बेमन से करेंगे तो निश्चय ही हमें उस कार्य में पूर्णतया सफलता नहीं मिलेगी।

5. टोपी पहनकर गवरइया राजा को दिखाने क्यों पहुँची जबकि उसकी बहस गवरा से हुई और वह गवरा के मुँह से अपनी बड़ाई सुन चुकी थी। लेकिन राजा से उसकी कोई बहस हुई ही नहीं थी। फिर भी वह राजा को चुनौती देने को पहुँची। कारण का अनुमान लगाइए।

उत्तर:- टोपी पहनकर गवरइया राजा को दिखाने पहुँची जबकि उसकी बहस गवरा से हुई और वह गवरा के मुँह से अपनी बड़ाई सुन चुकी थी। लेकिन राजा से उसकी कोई बहस हुई हीनहीं थी। फिर भी वह राजा को चुनौती देने को पहुँची क्योंकि गवरा ने बहस के दौरान कहा था कि टोपी मात्र राजा ही पहनता है। यह बात उसे अच्छी नहीं लगी थी।

6. यदि राजा के राज्य के सभी कारीगर अपने- अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त कर रहे होते तब गवरइया के साथ उन कारीगरों का व्यवहार कैसा होता?

उत्तर:- यदि राजा के राज्य के सभी कारीगर अपने- अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त कर रहे होते तब गवरइया के साथ उन कारीगरों का व्यवहार सामान्य होता और सर्वप्रथम वे राजा काकाम करते क्योंकि उनका काम ज्यादा था।

7. चारों कारीगर राजा के लिए काम कर रहे थे। एक रजाई ब ना रहा था। दूसरा अचकन के लिए सूत कात रहा था। तीसरा बागा बुन रहा था। चौथा राजा की सातवीं रानी की दसवीं संतान के लिए झब्बे सिल रहा था। उन चारों ने राजा का काम रोककर गवरइया का काम क्यों किया?

उत्तर:- चारों ने राजा का काम रोककर गवरइया का काम किया क्योंकि उन लो गों को काम की वाजिब मजदूरी मिली थी, जिससे वे सब खुश थे।

• भाषा की बात

8. गाँव की बोली में कई शब्दों का उच्चारण अलग होता है। उनकी वर्तनी भी बदल जाती है। जैसे गवरइया गौरैया का ग्रामीण उच्चारण है। उच्चारण केअनुसार इस शब्द की वर्तनी लिखी गई है। फुँदना , फुलगेंदा का बदला हुआ रूप है।

कहानी में अनेक शब्द हैं जो ग्रामीण उच्चारण में लिखे गए हैं , जैसे - मुलुक-मुल्क, खमा-क्षमा, मजूरी-मजदूरी, मल्लार-मलार इत्यादि। आप क्षेत्रीय या गाँवकी बोली में उपयोग होने वाले कुछ ऐसे शब्दों को खोजिए और उनका मूल रूप लिखिए, जैसे - टेम-टाइम, टेसन/टिसन-स्टेशन।

उत्तर:-

क्षेत्रीय भाषा	मूल रूप
घइला	घड़ा
लइकी	लड़की
भीख	भिक्षा
तरकारी	सब्जी
भात	चावल

9. मुहावरों के प्रयोग से भाषा आकर्षक बनती है। मुहावरे वाक्य के अंग होकर प्रयुक्त होते हैं। इनका अक्षरश : अर्थ नहीं बल्कि लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है। पाठ में अनेक मुहावरे आए हैं। टोपी को लेकर तीन मुहावरे हैं; जैसे - कितनों को टोपी पहनानी पड़ती है। शेष मुहावरों को खोजिए और उनका अर्थ ज्ञात करने का प्रयास कीजिए।

उत्तर:-

मुहावरा अर्थ

टोपी उछलना- बेइज्जती होना

टोपी से ढ़ँक लेना- इज्ज़त ढ़क लेना

टोपी कसकर पकड़ना- सम्मान बचाना